# सार संसार

जुलाई-सितम्बर 2017

वर्ष : 22 पूर्णांक : 87 जुलाई-सितम्बर 2017 अंक : 3

*मुख्य सम्पादक*
**अमृत मेहता**

**हमारी वेबसाइट**
www. saarsansaar.com
Email : saarsansaar@gmail.com

**मूल्य :**
एक प्रति : 20 रुपये
वार्षिक : 80 रुपये

**Subscription**
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs: 80.00

**प्रकाशक** : **अमृत मेहता**
जे-3/सी, लाजपत नगर-III
नई दिल्ली-110024
**मुख्य सम्पादक** : अमृत मेहता
**प्रकाशन अवधि** : त्रैमासिक
**शब्द संयोजन** : देवेन्द्र कुमार शर्मा
**मुद्रक** : हर्ष प्रोसेस एंड प्रिंटर्स
**मूल्य** : 20 रुपये : (एक प्रति)
: 80 रुपये (वार्षिक)
**मुख पृष्ठ** : यारोस्लाव साइफ र्ट

*Published by*
**Amrit Mehta**
at
J-3/C, Lajpat Nagar III
New Delhi–110024

## सम्पादक मंडल

**ज़ि वननुर रहमान**
अरबी एवं अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली-110067

**देवेन्द्र सिंह रावत**
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली-110067

**डागमार मारकोवा**
चार्ल्स यूनिवर्सिटी, प्राग

**बाबली मोइत्र सराफ**
इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली-110006

**अनुवादक परिचय**

**अमृत मेहता**

जे-3/सी, लाजपत नगर III

नई दिल्ली-110024

**स्वाति यादव**

प्राग, चेक गणराज्य

**डागमार मारकोवा**

चार्ल्स यूनिवर्सिटी, प्राग

**पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका अथवा अंकों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ इन पतों पर भेजें :**

देवेन्द्र कुमार शर्मा, डी-580, गली नं 4, अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली-110093

या

saarsansaar@gmail.com

Dear readers,

It gives me immense pleasure to unveil the new edition of Saar Sansaar which has a picture of the Czech poet Jaroslav Seifert on the cover.

According to Laurie Anderson "Literature is the safe and traditional vehicle through which we learn about the world and pass on values from one generation to the next. Books save lives". This truly lies with Saar Sansaar which is bringing, already so many years, beautiful, touchable and inspiring Hindi translations of world literature.

I am proud that in this edition you can read some poetry from Jaroslav Seifert. He is author of nearly thirty volumes of poetry for which he received a Nobel Prize for Literature. He was Czech national poet, writer and journalist. One of his best pieces he put in to his autobiography "All the Beauties of the World" in which he re-created the spirit of the Czech avant-garde between the two World Wars and during the Nazi occupation.

Seifert was remarkably popular in Czechoslovakia, both as a poet and as a symbol of freedom of expression for writers under an oppressive regime. In 1968, he condemned the Soviet invasion of his country and was one of the original signers of the Charter 77 Civil Rights movement. He was so remarkable person that when he died in January 1986 in Prague his funeral became a national event.

Nowadays streets in more than 60 cities and towns in the Czech Republic are named after him and remind that Jaroslav Seifert can be considered as one of the greatest European personalities of the 20th century.

**—Milan Hovorka**

Ambassador of the Czech Republic

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| सम्पादक की कलम से... | 7 |
| चिट्ठी आई है... | 18 |
| 1953 से 1956 तक बर्लिन प्रवास | 22 |
| पेरिस से पड़ोसी नगर में | 30 |
| प्रस्तरवृष्टि | 39 |
| हॉलीवुड | 46 |
| रात मिलती है रात से | 63 |
| यादें | 64 |


# सम्पादक की कलम से...

इस बार मेरे सम्पादकीय के केंद्र में मेरे दो पाठकों के पत्र होंगे। लेकिन उससे पहले मैं अपने पाठकों को और विश्व भर के हिन्दी प्रेमियों को, कुछ ऐसा बताना चाहता हूँ, जो मेरे लिए अत्यन्त उत्साहवर्धक है। हमारे एक पाठक ने, जिसके बारे में मैं पहले भी एक बार जि क्र कर चुका हूँ, 'सार संसार' से स्वयं चुने गए 10 पाठों के हिन्दी अनुवादों का अनुवाद नेपाली भाषा में करके 'दश विदेशी कथाहरु' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित करवाई है। नेपाली नेपाल के अलावा भारत तथा भूटान में भी एक अहम भाषा है। साहित्य-प्रेमी अनुवादक राजेंद्र ढकाल सिलीगुड़ी में रहते हैं, और उन्हें अनुवादों में परिश्रम करने के अलावा प्रकाशक ढूँढ़ने में भी पर्याप्त परिश्रम करना पड़ा है। भारत में हिन्दी को विदेशी भाषाओँ के साहित्य के अनुवाद के लिए छलनी भाषा बनाने की जो मेरी तमन्ना थी, वह एक लघु स्तर पर साकार हुई है। इससे पूर्व मेरे हिन्दी अनुवाद उर्दू, पंजाबी, तेलुगु तथा उड़िया में अनूदित हो चुके हैं, लेकिन यह पहली बार है कि हिन्दी अनुवादों से एक पुस्तक भारत की एक दूसरी भाषा में छपी है।

इस पुस्तक में रूसी तथा चेक से एक-एक लोककथा है, अब्दुल करीम हालत तथा सादेक हिदायत की दो ईरानी, फ्रांत्स होलर तथा पीटर बिक्सल की दो स्विस, रॉबर्ट मेनास्से, एल्फ्रीडे मायरयोकर तथा अलेग्ज ान्दर पेयर की तीन आस्ट्रियाई तथा नबीह शेयार की एक मिस्री कहानी है।

और इस अंक में ग्युन्टर ग्रास की फोल्कर नोएहॉउस लिखित जीवनी और फ्रांत्स होलर की 'प्रस्तरवृष्टि' धारावाहिक रूप में हैं, जिन दो मह त्त्वपूर्ण पाठों के अलावा आस्ट्रियाई अन्द्रेआस वेबर के उपन्यास 'डिटेक्टिव फाईटल' से एक अंश, इसी देश से मागदा वोइत्सुक की एक लम्बी कहानी, स्लोवाक लेखिका मारिया बातोरोवा, चेक लेखक इरेना स्तस्तना तथा यारोस्लाव साइफ र्ट की एक-एक कविता है।

*****

एक पत्र एक वेब-पत्रिका 'कविता कोष' के सम्पादक अनिल जयविजय का है, जो इस पत्रिका को मास्को से नेट पर प्रकाशित करते हैं :

*'सार संसार' के अंक आप लगातार भेजते हैं और मैं हर बार उन अंकों में से*

*कुछ रचनाएँ पढ़ने की कोशिश करता हूँ। लेकिन अनुवादों की हिन्दी भाषा इतनी खराब होती है कि आज तक कभी कोई रचना पूरी नहीं पढ़ पाया।*

*दरअसल ये सभी अनुवाद आप मूल भाषाओं से ज रूर कराते हैं, लेकिन अनुवाद किए गए उन पाठों का सम्पादन नहीं कराते। किसी अच्छी हिन्दी जानने वाले हिन्दी भाषी को इन अनुवादों का ढंग से सम्पादन भी करना चाहिए। इन अनूदित रचनाओं की भाषा को हिन्दी का संस्कार देना, हिन्दी की खूबसूरती देना भी बेहद ज रूरी है। अनुवाद का मतलब सिफ र्शाब्दिक अनुवाद ही नहीं होता।*

*मेहता जी, कृपया मेरी बातों को अन्यथा न लीजिएगा, लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि आपका सारा श्रम, आपकी सारी मेहनत व्यर्थ जा रही है। इन अनूदित रचनाओं को तब तक हिन्दी के पाठक पसन्द नहीं करेंगे, जब तक इन अनुवादों की भाषा हिन्दी के संस्कार वाली हिन्दी नहीं होगी।*

*आपके उत्साह को मेरा सलाम। मैंने सिफ र्अपने मन की बात कही है। मेरी बात पर विचार कीजिएगा। छोटा मुँह बड़ी बात कहने के लिए क्षमा चाहता हूँ।*

इस पत्र पर कोई टिप्पणी देने से पहले मैं ऐसे एक अन्य व्यक्ति द्वारा मेरी हिन्दी की आलोचना के सन्दर्भ में की गई कुछ असंयमित टिप्पणियों के बारे में अपने पाठकों को अवगत करवाना चाहूँगा। यह व्यक्ति एक 'मशहूर' पत्रिका 'चौथी दुनिया' के सम्पादक अनन्त विजय हैं। चूँकि यह अपने आपको आलोचक भी मानते हैं, ऊपर से पत्रकार भी हैं, अतः साहित्य के क्षेत्र में खुद को दबंग भी समझते हैं। 2008 में नोबेल पुरस्कार विजेता आस्ट्रियाई लेखिका एल्फ्रीडे येलीनेक के विश्वप्रसिद्ध उपन्यास 'पियानो टीचर' के मुझ द्वारा अनूदित हिन्दी अनुवाद की, जो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था, इन्होंने एक अत्यन्त सकारात्मक समीक्षा लिखी थी। लेकिन कुछ समय बीत जाने के बाद मेरे किसी पाठक ने अन्तरजाल में देख कर मुझे सूचित किया कि उन्होंने मेरे अनुवाद के बारे में बहुत घटिया टिप्पणियाँ और एक बड़ी वाहियात समीक्षा लिखी है। इस सूचना को मैंने सही पाया। अन्तरजाल पर ही मेरा और मेरे उस पाठक का इनके साथ विवाद चला। यह स्वतः स्पष्ट था कि एक अच्छी समीक्षा लिख लेने के बाद यदि कोई थूक कर चाटने वाली बात करता है तो उसके पीछे कुछ तो अभिप्राय है। अब जिस समीक्षक ने लेखिका का लिंग बदलकर उसका नाम 'फ्रेडरिक' कर दिया हो, जिसे इतना भी मालूम न हो कि अँग्रेजी शब्द 'ट्रांसलिटरेशन' का अर्थ 'लिप्यान्तरण' होता है, और जो अपनी अँग्रेज ी का ज्ञान बघारने के लिए लिखे कि ***'ट्रांसलिटरेशन'*** *के चक्कर में अमृत मेहता ने कुछ बेहद अश्लील शब्दों का इस्तेमाल किया जो गैरज रूरी था,"* यह सोचे बिना कि अनुवादक मूल पाठ में इस्तेमाल की गई भाषा के रजिस्टर से छेड़छाड़ नहीं कर सकता, जो शेखी



बघारे कि उसने जर्मन में लिखी गई पुस्तक मूल भाषा अँग्रेजी में पढ़ी है, जो सर्वज्ञ की तरह ऐसे ऊल-जुलूल वाक्य फेंकता हो जैसे, *"अमूमन अनुवाद में लेखक तभी जुटते हैं, जब उनके पास या तो काम नहीं होता है, कम होता है या नहीं होता है (sic)। जैसे ही काम मिलता है अनुवाद को लेकर वे उदासीन हो जाते हैं।"* या *"अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद नहीं हो पाया और हिन्दी के पाठक का परिचय विश्व की अन्यतम कृति से नहीं हो पाया"*, जिसने वास्तव में न अनुवाद को पढ़ा हो, न मूल पुस्तक को, जिसका प्रमाण है उसका यह कहना कि *"अमृत मेहता ने लिखा कि नायिका बाथटब में अपने हाथ की नस काट लेती है, जबकि मूल उपन्यास में येलनिक (sic) ने लिखा है कि नायिका बाथटब में अपना यौनांग काट लेती है।"*, क्योंकि वास्तव में उपन्यास में नायिका दो जगह अपने अंग काटती है, एक बार नस और एक बार यौनांग, और जो व्यक्ति किसी अन्य निरक्षर व्यक्ति से कुछ सुन लेने के बाद समीक्षा लिखने बैठ जाए, जिसकी अपनी हिन्दी माशा अल्लाह हो, ऐसे तकरीबन अनपढ़ व्यक्ति की टिप्पणियों की मुझे उपेक्षा करनी चाहिए थी। अनन्त विजय से मेरा वार्तालाप उनकी वेबसाइट पर बहुत समय तक चला था, जिसमें अनन्त मेरे किसी भी आरोप का उत्तर नहीं दे पाए, और अन्त में मुझे यह धमकी दी कि वे मेरी और सभी अनूदित पुस्तकों की भी ऐसी ही समीक्षा छाप देंगे। मैं इसकी उपेक्षा नहीं कर सकता था और अनिल जयविजय के पत्र की भी, क्योंकि ऐसे कुछ सोचे-समझे आक्रमण मुझ पर कभी-कभी ही होते हैं, जो इस तथ्य का प्रमाण होते हैं कि प्रछन्न रूप से जो षड्यन्त्र मेरे, मेरी पत्रिका एवं मेरे अनुवाद-कर्म के विरुद्ध रचे जाते हैं, उनमें एक विशेष गिरोह का हाथ है। इसके लिए मुझे अपने सुधी पाठकों को 'सार संसार' के प्रकाशन वर्ष में इक्कीस साल पीछे ले जाना पड़ेगा।

6 फरवरी, 1996 को 'सार संसार' के प्रथम अंक का इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में लोकार्पण किया गया था, जिसमें मेरे एक सम्पादक ने, जो मेरी पत्रिका का शुभचिन्तक नहीं था, क्योंकि उसने अपना एक निजी 'साहित्य अनुवाद केन्द्र' खोल रखा था, जिसके नाम पर वह यहाँ-वहाँ से, कभी पूरी न होने वाली परियोजनाओं के लिए धन लेता था। उसने अपने कुछ ऐसे लेखक मित्रों को, जिन्हें मैंने लोकार्पण पर आमन्त्रित नहीं किया था मुझे हतोत्साहित करने के लिए वहाँ पर बुला रखा था, ताकि पत्रिका का दूसरा अंक फिर कभी न निकल सके। यह शख्स था जेएनयू का 'आज वामपन्थी-कल दक्षिणपन्थी' जर्मन का प्रोफ ेसर प्रमोद तलगेरी। अपने दोस्तों की जो पूरी पलटन उसने बुलाई थी, उनमें से मैं सिर्फ विष्णु खरे, कृष्ण बलदेव वैद और विष्णु नागर को पहचानता था। सबके मना करने के बावजूद तलगेरी ने

नागर से पत्रिका की एक हस्तलिखित समीक्षा पढ़वाई, जिसमें नागर ने पत्रिका के अनुवादों की दिल खोलकर बेइज्ज ती की। यह गिरोह वहीं पर बैठकर पत्रिका पर बहस करके उसका मूलोच्छेदन करना चाहता था, लेकिन मुख्य अतिथि, स्विट्ज रलैंड के सांस्कृतिक दूत पिऐर कोम्बर्नू ने उन सबको यह कहकर फटकारा कि लोकार्पण समारोह में समीक्षा का कोई अर्थ नहीं होता, और एक ऐसे व्यक्ति द्वारा समीक्षा लिखना, जिसे कोई विदेशी भाषा नहीं आती, स्वीकार्य नहीं था। उस गिरोह को तिरस्कृत होकर हॉल को खाली करना पड़ा। उस दिन से 21 साल बाद आज भी षड्यन्त्रों की शृंखला जारी है। मैंने तब अगले दिन विष्णु नागर को पंजीकृत डाक से एक पत्र भेजकर उसकी समीक्षा की एक कृति माँगी थी, इस आश्वासन के साथ कि मैं उसके हर आरोप का उत्तर दूँगा, और उसका उत्तर उसको भी देने दूँगा, और इस बहस को अनिश्चित समय तक के लिए जारी रखा जा सकता था, जब तक कि यह सिद्ध न हो जाए कि गलत कौन था। आज इक्कीस साल हो गए, उसका उत्तर आज तक नहीं आया।

अप्रैल, 1996 के अंक में मैंने इस घटना का सविस्तार विवरण दिया था। मैं दिल्ली छोड़कर हैदराबाद के केन्द्रीय अँग्रेजी एवं विदेशी भाषा संस्थान में नौकरी करने गया तो तलगेरी दुर्भाग्यवश वहाँ मेरा उपकुलपति बनकर आ गया। वहाँ मैं अनुवाद केन्द्र का अध्यक्ष था, उसने मेरे केन्द्र को बरबाद कर दिया, वहाँ कोई पाठ्यकर्म नहीं शुरू होने दिए, दूसरे विभागों से शिक्षकों को लाकर मेरे सर पर बिठा दिया, मुझे निलम्बित कर दिया, मुफ लिसी तक पहुँचा दिया, अनेको मानसिक यातनाएँ दीं, और सच तो यह है कि 'सारी कायनात उसके साथ थी', क्योंकि उसके पास सरकार द्वारा प्रदत्त ताकत थी। लेकिन सौभायवश (देश के लिए दुर्भाग्यवश) वह इतना भ्रष्ट था, इतना लोभी कि अवैध धन कमाने के फेर में उसने पूरी यूनिवर्सिटी का सत्यानाश कर दिया। इस सम्बन्ध में मैंने संसद में सवाल उठवाए। मैं 15 माह निलम्बित तो रहा, लेकिन उसके खिलाफ सबूत इकट्ठे करता रहा। उसे दंड दिलवाया। क्या दंड मिला उसे? केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने मानव संसाधन विकास मन्त्रालय को आदेश दिया कि उसे उसकी करतूतों की वजह से सरकार की नाराज गी से अवगत करवा दिया जाए, और यूनिवर्सिटी सिस्टम में उसे फिर कहीं नियुक्त न किया जाए। यह सब हुआ मेरे 11 साल के संघर्ष के बाद। लेकिन तलगेरी पुणे में एक जाली यूनिवर्सिटी खोलकर अब भी बैठा है। उसने इस सहस्त्राब्दी में सिर्फ हैदराबाद के संस्थान को ही नहीं लूटा, कई और यूनिवर्सिटियों, साहित्य अकादमी सहित कई अन्य सरकारी संस्थानों को, बल्कि यहाँ तक कि कई विदेशी दूतावासों को भी लूटा। और हमारे जिन पाठकों ने सच्चिदानन्दन इत्यादि जैसे लोगों के बारे में मेरे सम्पादकीय पढ़ रखे होंगे, वह मेरी कटुता के पीछे छुपे क्षोभ को समझते होंगे। इस



गिरोह के सदस्य सैकड़ों में हैं ये लोग अब भी एक साथ हैं, कई सरकारी पदों पर भी विराजमान हैं, और वही कर रहे हैं, जो इन्हें नहीं करना चाहिए, अर्थात जो शान्ति से अपना काम कर रहे हैं, उन्हें उनका काम करने से रोक रहे हैं।

2005 में सूचना अधिकार अधिनियम लागू होने के समय से मैं एक आर.टी.आई. एक्टिविस्ट बन गया हूँ। छोटे से छोटे और ऊँचे से ऊँचे स्तर पर मुश्किल सवाल पूछता हूँ। कभी सच खुलता है, अधिकांशतः नहीं खुलता। सफ ेद झूठ बोले जाते हैं। हर तरफ से मुझ पर कहीं न कहीं से हमला लगातार हो रहा होता है। इस तरह के पत्राचार की फ इलों से मेरी एक पूरी अलमारी भरी पड़ी है। फिर भी साहित्य का काम कर ही लेता हूँ। परन्तु मुझे काम करने से रोकने की मुहिम अब तक जारी है। मैं सूचना अधिकार कार्यकर्ता ज बरदस्ती बना हूँ, शौक से नहीं बना। मुझे अपना काम करने के लिए समय चाहिए, जो ये लोग मुझसे छीन रहे हैं। लेकिन अगर इन लोगों के गलत धंधे न पकड़ूँ तो ये मेरा जीना मुहाल कर देंगे।

इन 21 वर्षों में बहुत से लोगों की पोल खोलता रहा हूँ, लेकिन अपने इतर-साहित्यिक जीवन-चरित को मैंने अपने सम्पादकीय का विषय कभी नहीं बनाया, लेकिन कब तक अपने जीवन के एक उस खंड को दूसरे से छुपाए रख सकता हूँ, जो मेरे साहित्यिक कार्य-कलाप को हर पल प्रभावित कर रहा होता है!

अब मैं पुनः अनिल जयविजय पर लौटता हूँ। अनन्त विजय के पूरे कारनामों पर एक लम्बा आलेख लिखकर मैंने वेबजीन 'सृजनगाथा' में प्रकाशित करवाया था। उसकी प्रतिक्रिया मेरे लिए अत्यन्त उत्साहजनक थी। विजय की काफी लानत-मलामत हुई। काफी समय अन्तरजाल पर रहने के बाद अब यह पृष्ठ वेब में उपलब्ध नहीं है। लेकिन एक वर्ष पहले अनिल की ही एक टिप्पणी मैंने उस लेख के सन्दर्भ में पढ़ी थी। मुझे सीधा नहीं लिखा इन्होंने, लेकिन पत्रिका में मेरी भाषा के सन्दर्भ में तकरीबन यही विचार यह पहले भी व्यक्त कर चुके थे। एक टिप्पणी जो इन्होंने उसमें अतिरिक्त की थी, वह मुझे भेजे पत्र में नहीं की। वह यह कि अमृत मेहता पंजाबी हैं, (इसलिए) इन्हें हिन्दी नहीं आती। यह टिप्पणी न सिफ र्फ नस्लवादी है, बल्कि हमारी राष्ट्रभाषा के लिए भी अपमानजनक है। विष्णु खरे भी अपने लेखन में पंजाबियों को कोसते हैं, इन्होंने भी कोसा है। अर्थात इन्होंने इस एक गिरोह को बन्दूक चलाने के लिए अपना कन्धा पेश किया है, न जाने कौन से फ ायदे उठाने के लिए!

परन्तु मैं दावे के साथ कैसे कह सकता हूँ कि अनिल जयविजय उस बड़े षड्यन्त्र

में शामिल हैं, जो मेरे विरुद्ध रचा गया है? उसका पुख्ता सबूत है मेरे पास। 1911 में, मेरी पत्रिका की 15वीं जयन्ती पर अनिल ने मुझे एक बधाई-सन्देश भेजा था, जो मैंने प्रकाशित भी किया था

*''मैंने 'सार संसार' करीब पाँच साल पहले देखी थी और मैं उसे देखकर एक अप्रतिम खुशी से भर गया था। मैं पिछले करीब पैंतीस साल से विदेशी साहित्य का अनुवाद कर रहा हूँ और यह मानता हूँ कि भारतीय पाठक को विदेशी साहित्य का ज्ञान बहुत कम है क्योंकि भारत में विदेशी साहित्य का अनुवाद करीब-करीब नहीं किया जाता है। अँग्रेज ी जानने वाले अँग्रेज ी में विदेशी साहित्य पढ़ लेते हैं और अँग्रेज ी न जानने वाले विदेशी साहित्य से अपरिचित रह जाते हैं। अगर अँग्रेज ी जानने वाले सभी लोग यह दायित्व भी उठाएँ कि अपनी भाषा में विदेशी साहित्य को भी प्रस्तुत करना है तो भारत का पाठक भी कितना समृद्ध हो जाएगा, इसकी हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। आपने यह दायित्व उठाया और इस दिशा में पन्द्रह वर्षों तक लगातार अथक श्रम किया, न सिर्फ अनुवाद किया बल्कि उसे प्रकाशित भी किया, इस महती काम के लिए मैं आपका और 'सार संसार' का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। 'सार संसार' का रूप-रंग यद्यपि बेहद साधारण है, लेकिन यह बड़ा महत्त्वपूर्ण काम कर रही है। मेरा मानना है कि इस पत्रिका के सभी महत्त्वपूर्ण अंकों का फिर से प्रकाशन होना चाहिए ताकि वे रचनाएँ, जिनसे मेरे जैसे पाठक अपरिचित रह गए हैं, उन्हें पढ़ सकें। अगर आपके पास 'सार संसार' के सभी अंक उपलब्ध हों तो उनकी पूरी फाईल खरीदकर मैं अपने पुस्तकालय में भी रखना चाहूँगा। मैं आपसे यह वायदा भी करता हूँ कि आगे से 'सार संसार' को हर तरह का सहयोग दूँगा, जो भी आप चाहेंगे। मेरे योग्य कोई भी काम हो तो अवश्य बताएँ। मेरी कामना है कि 'सार संसार' का प्रकाशन लगातार होता रहे और जो प्रकाश वह भारत में फैला रही है, वह निरन्तर बना रहे। आपको मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ।''*

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? पहले थूकना, फिर चाट लेना! अनन्त विजय ने यही किया, अनिल जयविजय ने भी वही किया।

मुझे अपनी भाषा के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण देने की कोई ज रूरत नहीं है, लेकिन सच यह है कि दूसरे अनुवादकों की भाषा को भी मैं बिना परिष्कृत किए नहीं छापता। मैं अपना इकलौता कर्मचारी हूँ, कभी-कभार कोई त्रुटियाँ रह भी जाती होंगी, परन्तु मेरे अन्य पाठक मुझे आरम्भ से सुझाव भी देते रहे हैं, और अपना प्यार भी देते रहे हैं। ऐसे रंग किसी ने नहीं बदले। मुझे आत्मश्लाघा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि 21 सालों से नामी साहित्यकारों ने मुझे केवल प्रोत्साहित ही किया है, जिनमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं



*''गिरिराज किशोर (सबसे बड़ी बात आपका अनुवाद। मौलिक रचना जैसा आस्वादक हिन्दी को आप इस पत्रिका से समृद्ध कर रहे हैं।), राजेन्द्र यादव, स्वदेश दीपक, हसन जमाल, वेणु गोपाल (मेरे अनुवादों पर अनेको लेख लिखने वाले), विद्या सागर नौटियाल, प्रेम कुमार, इन्दु जैन (सभी अनुवादकों और चयनकर्ताओं को मेरा हार्दिक धन्यवाद), मधुर शास्त्री (सबसे अच्छी बात यह है कि अनुवाद इतना कुशल है कि इसमें प्राकृत भाषा का पूरा स्वाद मिलता है। कविताओं के अनुवाद भी बहुत अच्छे हैं), श्रीरंग, ममता कालिया, प्रमोद तिवारी (भाषा के स्तर पर और समझ के स्तर पर आपने हिन्दी को इतना सँवार लिया है, बल्कि आप मूलतः हिन्दी भाषी ही हैं, इसलिए आपने भाषा और संवेदन से अपने को इतना समृद्ध कर लिया है कि आप मौलिक लेखन भी कर सकते हैं, दोनों भाषाओं में। आश्चर्य नहीं कि आप मौलिक लेखन भी कर रहे हों), हृदयेश (यदि भविष्य में परम्परा से हटकर ज मीन पर कोई बड़ी रचना लिख सका तो इसका श्रेय आपकी पत्रिका को जाएगा), विकास नारायण राय, प्रयाग शुक्ल, अनामिका, असगर वजाहत, सूर्यबाला, इन्दिरा देवी धनराजगीर (प्रखर अनुवाद का जादू अपना काम कर रहा है। यह सब एक प्रतिभाशाली और उत्कृष्ट अनुवादक की देन है), रमेशचन्द्र शाह (कहानियाँ पढ़कर ऐसे लगा कि हिन्दी की व्यंजना शक्ति को जहाँ-तहाँ जानने जनवाने की लालसा इन अनुवादों के पीछे काम कर रही है...आप इसके लिए बधाई के पात्र हैं), लाल बहादुर वर्मा, रवीन्द्र कालिया, कमल किशोर गोयनका, जय प्रकाश मानस, आबिद सुरती, अभिनव शुक्ल, मनीषा कुलश्रेष्ठ (मैंने आपकी जर्मन से हिन्दी में अनुवादित पुस्तकें पढ़ीं, और मुझे बेहद पसन्द आईं...आपको इतने बढ़िया अनुवाद के लिए बधाई देना चाहती थी), अमृत लाल मदान (वाकई आश्चर्य होता है कि आपने इंगलिश के आलावा अन्य कई यूरोपीय भाषाओं पर इतना अधिकार कर रखा है कि मौलिक जैसा अनुवाद कर लेते हैं। आपकी विद्वता एवं क्षमता प्रणम्य है), अतुल कनक (गोएटे पर योजेफ बनाश का लेख कई बार दिल को छूता है। अनुवादक को भी साधुवाद), वेद प्रकाश अमिताभ (युवा अनुवादकों में अनुवाद-योग्य कौशल और अच्छी सम्भावनाएँ हैं), जसवन्त सिंह विर्दी, शैलेन्द्र सागर, निर्मला भुराडिया, राजी सेठ (अनुवाद सरस और प्रभावी होते हैं...अनुवाद सम्बन्धी सभी चेष्टाएँ श्लाघनीय हैं), चन्द्र सेन विराट, विजय प्रकाश बेरी (जुलाई 2012 के अंक की रचनाओं में जीवन-सौन्दर्य और वीभत्सता को अत्यन्त गहराई के साथ विदेशी लेखनों में प्रस्तुत किया है, और इसका श्रेय अनुवाद की सफलता को जाता है), राजेन्द्र नागदेव (सहजता तथा अभिव्यक्ति शैली में अद्‌भुत है),* कमल सिंह, और भारतीय संसद में हिन्दी के घोर समर्थक भूतपूर्व सांसद बालकवि बैरागी, जिनके ताज ा आए दो खत इस अंक में प्रकाशित हो रहे हैं।''

मैंने केवल उन्हीं पत्रों से उद्धरण दिए हैं, जिनमें भाषा के बारे में कोई टिप्पणी है।

अनिल जयविजय के हाल में आए आपत्तिजनक पत्र के सन्दर्भ में स्पष्ट होता है कि पत्रिका की हिन्दी में कोई खराबी नहीं है, लेकिन इनकी नीयत में ज रूर कोई खराबी है।

हाल ही में आया एक और पत्र प्रसिद्ध लेखक तथा समालोचक डॉ. प्रेम कुमार का है, जिनसे मैं जीवन में केवल एक बार मिला हूँ, लेकिन फ ोन-वार्तालाप में उनके साथ अपने अनुभव बाँटता रहा हूँ। पत्रिका तथा उसके सम्पादक के बारे में यह एक बहुत लम्बा पत्र है। मैंने इसे अपने सम्पादकीय का अंश बनाना उचित समझा है

*श्रीयुत् अमृत मेहता जी,*

*जनवरी-मार्च, 2017 के अंक की मेहरबानी कि अन्ततः आज यह सब लिखने-कहने बैठ गया हूँ। लग रहा है कि टलते-टालते जाने की अब तक की कोफ त से अब शायद निजात मिल ही जाएगी। आज हिम्मत करके लिखने बैठा हूँ तो पिछले लगभग अठारह-उन्नीस बरस का आपसे और 'सार संसार' से जुड़ा न जाने कितना कुछ याद आए जा रहा है। तब आप हैदराबाद में थे। पत्रिका के कुछ ही अंक निकले थे। इतने पहले के उन दिनों से मैं 'सार संसार' को पढ़ता रहा हूँ। मेरी आपकी फोन पर लगातार बातें होती रही हैं। घर-परिवार और आय-अर्जन की तमाम तरह की दिक्कतों के बीच विदेशी साहित्य एवं लेखन से हिन्दी की दुनिया को अवगत-परिचित कराने-कराते रहने के आपके संकल्प, समर्पण या कहूँ कि जुनूनी जज बे के लिए तब से ही मेरे मन में एक खास तरह का सम्मान जन्मता-पलता रहा है। हैदराबाद में रहकर विदेशी रचनाकारों से, वहाँ के साहित्य से सम्बन्ध-सम्पर्क बनाए रखना, हैदराबाद से दिल्ली तक की भाग-दौड़ और फिर अन्य देशों के लिए उड़ानें भरते रहना, कई-कई भाषाओं में स्वयं को दीक्षित-पारंगत करते जाना, अनुवाद जैसे चुनौतीपूर्ण कार्य को निरन्तर सम्पन्न-सम्पादित करते जाना और फिर ऐसे इस विराट यज्ञ में अपने संग-साथ के लिए प्रभावी-प्रामाणिक अनुवाद कर सकने वाले योग्य-समर्थक लोगों को तलाशने-जुटाने के प्रयास को जारी रखना...जारी भी दो-एक महीने या साल-दो-साल नहीं दो दशक से भी अधिक समय तक सबके बस की बात नहीं है अथवा यूँ ही किए जा सकने वाला कोई आसान काम नहीं है। हर इल्लत-फिल्लत से बचा-सँभालकर पत्रिका को नियमित, स्तरीय, बेहतरीन बनाए रखना सचमुच बिना परिश्रम, हिम्मत, जीवट और साधना के सम्भव ही नहीं हो सकता। कल्पना मात्र से ही सिहरन होती है एक अकेली आत्मा सम्पादक होने*



*के नाते धन जुटाने की कैसी-कैसी कवायदों के साथ-साथ रचनाओं के चयन, सम्पादन, प्रकाशन के अलावा, पत्रिका पर पता लिखने, टिकिट चिपकाने से लेकर उनके भेजे जाने तक की सभी प्रक्रियाएँ केवल एक अकेले के सर पर। तमाम-तमाम यात्राएँ, पत्र-व्यवहार, अनुवादकों को ढूँढ़, मना पाना, उनसे लाभ ले पाना...इन सबमें से कोई एक काम भी सहजता से सम्पन्न हो सकने या कराए जा सकने वाला तो नहीं ही कहा जा सकता। फिर भी अगर आप यह सब इतने वर्षों से कर पा रहे हैं, कर नहीं पा रहे शान से किए जा रहे हैं, सीना तानकर और सर ऊँचा रखकर किए जा रहे हैं तो इस सबके लिए आप निःसन्देह बधाई के अधिकारी हैं सभी के स्नेह-सम्मान के पात्र हैं। पत्रिका के सुख, स्वास्थ्य और भविष्य का ख़्याल कर आपने हैदराबाद रहना छोड़ा, दिल्ली जैसी अपनी नापसन्द की जगह को अपना रहवास बनाया इसलिए कि भले ही यहाँ रहना ज यादा हो पाए या न हो पाए, यहाँ से बाहर की यात्राएँ आसान और किफायती हो सकेंगी। और सचमुच जैसा सोचा-चाहा था, वह हुआ काफ ी कम समय में हुआ यानी पत्रिका की प्रसार-संख्या बढ़ी, उसकी गुणवत्ता व विविधता में इजाफ ा हुआ, उसके पाठकों के बीच उसकी इज्ज त, ख्याति, चाहना काफ ी तेज ी से बढ़ी और उसकी पहुँच देश-विदेश के गाँवों-कस्बों, शहरों तक हुई नए-नए स्थानों-क्षेत्रों तक हुई। बधाई इसलिए कि अपने अकेले के बल पर आपके द्वारा इतना ऐसा यह हो पाया। वरना आप भी जानते हैं कि बड़े-बड़े सेठों-संस्थानों के दम पर निकाली जाने वाली कितनी ही पत्रिकाएँ अच्छे-खासे तामझाम के बावजूद लावारिसों की तरह दफ न होती रही हैं। 'सार संसार' अपने नाम में भी कशिश और खूबसूरती के साथ सदैव आकर्षक-सम्मोहक बनी रही है। अच्छा-भला सा कागज , भली-चंगी-सी छपाई, सुन्दर-प्यारे से फोटो, एकाग्रता के साथ की गई प्रूफरीडिंग, सुपाठ्य, दृष्टिप्रिय से अक्षर-शब्द तथा रचनाओं का चयन, उनके अनुवाद का स्तर, उसकी दृष्टि, उसकी सम्प्रेषणीयता उत्तरोत्तर बढ़ती-सँवरती ही रह गई है। 'सार संसार' यानी सोहना-सा एक नाम। नाम में फबता-सा एक अलंकार भी और संसार को निस्सार बताने वालों के लिए एक संकेत-सीख और एक ताकीद भी कि संसार सारवान है। इसके साथ-साथ ध्वनित-व्यंजित होते ये अर्थ भी संसार का सार या सारवान संसार।*

*उस दिन की और उस दिन से आपकी याद मुझे अक्सर आती रही है। आस्ट्रिया के लेखक आंद्रेयास वेबर के साथ बातचीत होनी थी। दिन-समय-स्थान सब पहले से तय था। कनॉट प्लेस में रीगल के गेट पर हम तीनों की मुलाक ात हुई थी। रीगल के ऊपर के उस रेस्ट्रां में कुछ देर हम लोगों का बैठना-बतियाना हुआ था। वहाँ से आस्ट्रियाई दूतावास पहुँचे थे हम तीनों लोग। और फिर वहाँ देर रात तक चली वह लम्बी दिलचस्प और यादगार बातचीत एवं वहाँ की वह आव-भगत। सामने सोफे*

*पर बैठे युवा-सौम्य-आकर्षक आंद्रेयास वेबर। उनकी बगल में बैठे आप और पास के सोफे पर बैठा मैं। मेरे प्रश्नों और उनके खूब लम्बे-लम्बे उत्तरों का जिस अधिकार और प्रवाह के साथ आप तुरन्त अनुवाद करते गए थे, उसने मुझे चकित-सम्मोहित किया था। आपकी प्रतिभा और योग्यता के लिए मेरे मन में अतिरिक्त-से सम्मान का एक खास भाव जागा था तब। आपके उस रूप और प्रभाव का रौब मुझ पर अभी तक गालिब है। और फिर उस दिन के पूरे व्यस्त कार्यक्रम के बीच आपका वह समन्वय, संयोजन, मधुर-मृदुल व्यवहार, हम दोनों की संवेदनाओं एवं सुविधाओं का भरपूर ख़्याल रखना  सब अक्सर याद आता है...मन में अभी तक पूर्ववत् उपस्थित है।*

*इस अंक से जाना कि 'सार संसार' इक्कीसवें वर्ष में प्रवेश कर गया है  यानी कि उम्र के बेहतरीन मोड़ पर आ पहुँचा है। अत्यन्त सबल, सुन्दर, ऊर्जा, साहस, कल्पनाओं, स्वप्नों और संकल्पों से भरपूर उम्र में। यह भी कि 'टीन ऐज' जैसी रपटा-भटका सकने की तमाम चिन्ताओं, आशंकाओं से आगे की उम्र में! बधाई! यह निःसन्देह किसी पत्रिका या सम्पादक का अत्यन्त मूल्यवान एवं प्रशस्य प्रदेय ही माना जाएगा कि उसने लेखक-अनुवादक होने की दिशा में एक-दो या केवल दस-बीस ही नहीं, शतक से जरा ही कम बानवे व्यक्तियों को प्रेरित-पोषित किया है। मुझे याद आता है कि आपने पिछले वर्षों में अनुवादकों को तलाशने-सिखाने-सँवारने-बनाने के उद्देश्य से कई जगह कार्यशालाएँ भी आयोजित की हैं  सम्पन्न कराई हैं। उनकी सफलता से मिले आपके सुख-सन्तोष एवं उल्लास को मैंने फोन पर आपसे हुई बातचीत के माध्यम से सुना-जाना है।*

*और अब एक उल्लेखनीय व श्लाघनीय तथ्य और पक्ष यह है कि इस अंक से शायद तीन या चार अंक पहले के किसी अंक में मैंने पहली बार अच्छी-खासी लम्बी एक सम्पादकीय के माध्यम से आपकी मारक-बेधक मुखरता एवं प्रखरता के बारे में जाना-समझा था। मुझे आपके उन पीड़ादायी अनुभवों ने क्षुब्ध तथा सशक्त प्रतिवाद के अन्दाज  ने व्यग्र-विचलित किया था। समझ नहीं आया कि इतना ऐसा यह सब पढ़कर मैं क्या करूँ  या कर सकता हूँ। खीझते-झींकते धीरे-धीरे वह क्षोभ और आक्रोश कम होता गया और अब उस सबको मैं लगभग भुला ही चुका था। ...लेकिन यह ताज  ा अंक और इसमें एक बार फिर किंचित बदले  नये-से अन्दाज में आपकी वही प्रखरता  किसी को भी आहत-स्तब्ध कर सकने वाली मुखरता। आपने जर्मनी से मिली जिस मेल को उद्धृत कर जो कुछ जैसे अपने पाठकों को बता-समझा देना चाहा है, वह निःसन्देह अरसे से उफ  न-उबल रहे आपके अन्तस के लावे का ही नन्हा-सा एक रिसाव है। जो भी हो इसे पढ़कर फिर एक दिन तक परेशान-बेचैन रहा हूँ। खुद से तरह-तरह से पूछा है कई बार कि ऐसे में क्या कुछ*



*किया जाना अपेक्षित-अपरिहार्य है। लोठार लुत्से के बारे में यह सब पढ़-जानकर मन आहत-पीड़ित हुआ। मन को समझाने के लिए कह-सोच लिया कि ऐसी यह सड़न, ऐसा यह प्रदूषण अब किसी खास एक क्षेत्र या स्थान तक सीमित नहीं है, दिक-दिगन्त-व्यापी-सा होता जा रहा है। याद आता है अक्सर उद्धृत किया जाता रहा वह शेर  'बरबाद चमन करने के लिए बस एक ही उल्लू काफी है... ।' जब शाख-शाख ही नहीं, टहनियों-पत्तों तक को उल्लुओं ने हथिया-कब्ज  ा लिया हो तो फूलों-पौधों या शाखाओं  दरख़्तों का अंजाम ऐसा यही होना है। आज की भयावह विडम्बना ही यह है ही मज  बूत, ऊँचे, सम्मान्य, फलदायी पेड़-पौधे को या तो दीमकें चाटने में जुटी हैं या फिर आरियों-कुल्हाड़ियों की मदद से उसे चीरा-काटा जा रहा है। कौन नहीं जानता कि इन आरियों-कुल्हाड़ियों में बैंटे किसके होते हैं...? खैर, आपके हृदय में की ऐसी इस आग के लिए आपको बधाई...शुभकामनाएँ। अँधेरे कितने भी घने-विस्तृत हों, रोशनी की ज  रा-सी किरण...आग की नन्ही-सी चिंगारी उन पर भारी पड़ती है।...'वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो... ।'*

*साभार*

*आपका*

***प्रेम कुमार***

*कृष्णाधाम कॉलोनी*

*आगरा रोड़, अलीगढ़  202001*

*पुनश्च : कुछ व्यक्तियों के लिए ''नालायक'' जैसे कठोर शब्दों का इस्तेमाल मुझे कुछ अखरा है। इससे बचा जा सकता था।*

यह लम्बा सम्पादकीय मेरे नुक्ताचीनों के लिए है, जो मेरे ख़िलाफ  किसी बड़े अभियान की तैयारी में लगते हैं।

**अमृत मेहता**

# चिट्ठी आई है...

आपका एक पत्र मुझे 9 मई को मिला। आपको धन्यवाद। इस पत्र के अनुसार आप इन दिनों आस्ट्रिया और जर्मनी में हैं और 7 जून को वापस भारत लौटेंगे। अस्तु, आप जहाँ भी हों, वहाँ से हिन्दी के लिए विदेशी साहित्य अवश्य लाएँगे। हिन्दी की यह एक बहुत बड़ी सेवा है। आपको बधाई। ''सार संसार'' मुझे बराबर मिल रहा है। मैं उसे पूरी गम्भीरता से पढ़ता हूँ। ''चेक सम्राट'' वाला अप्रैल-जून अंक भी मुझे 9 मई को ही मिला। आपका आभारी हूँ।

**बालकवि बैरागी, पूर्व सांसद, मनासा**

मैं ''सार संसार'' का एक ठीक-ठीक पाठक हूँ और आपके परिश्रम तथा पसीने का प्रशंसक हूँ। आपसे सर्वथा अपरिचित हूँ, पर आपको पत्र लिखता रहता हूँ। यह मेरी सम्मान देने वाली एक अटपटी शैली है। मेरे लायक कोई काम आपके मन में है नहीं। उसका कारण यही है कि आप मुझे नाम से जानते हैं, मेरी मिट्टी से नहीं जानते। आपके लिए यह जरूरी भी नहीं कि आप मुझे जानें या पहचानें...आपके यश और आपकी कामनाओं के प्रति मैं अपने आराध्य का एक याचक प्रार्थी हूँ। ''सार संसार'' का ''चेक सम्राट'' वाला ''अप्रैल-जून 2017 अंक आपने प्राग यूनिवर्सिटी वाली लेखिका ''डागमार मारकोवा'' को समर्पित करके हिन्दी को सचमुच नया गौरव दिया है। आपका अभिनन्दन और डागमार मारकोवा को सस्नेह हार्दिक प्रणाम।

**बालकवि बैरागी, पूर्व सांसद, मनासा**

जुलाई में 95 पूरे कर लूँगा  साथ ही साथ यह भी बता दूँ कि हम दोनों बहुत बीमार हैं। आपकी पत्रिका सर्वश्रेष्ठ है. आप हमारे प्रिय हैं। आप स्वस्थ रहें और सतत सार संसार चलाते रहें।

**नवल जायसवाल, भोपाल**



(जायसवाल जी, आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ, और  आप दोनों की शुभकामनाएँ चाहता हूँ)

**अमृत मेहता**

अमृत, मैं बहुत समय से तुम्हारे बारे में सोचता रहा हूँ, इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि जहाँ तक मैं जानता हूँ भारत-जर्मन- विद्या के क्षेत्र में तुम काम करने वाले बेहतर आधे हिस्से में से हो, मतलब तुमने कम से कम कोई नतीजे तो दिखाए हैं  अपनी पत्रिका निकाली, और निबन्ध लिखे। तुम जवाहर लाल यूनिवर्सिटी के उन प्रोफेसरों की तरह नहीं हो, जो ढेर सारा पैसा खा गये, और नतीजा शून्य अथवा नकारात्मक निकला। इस विषय पर शीघ्र ही एक ब्योरेवार मेल भारत सरकार को जायेगी।

**अनंत कुमार, लेखक, माइन्त्स, जर्मनी**

(यह अन्तिम वाक्य मैं समझा नहीं (**अ.मे.**)

चेक विशेषांक भेजने के लिए आपका धन्यवाद। पढ़ने को उतावला हो रहा हूँ। फेसबुक का लिंक भेज रहा हूँ, जहाँ मैंने यह सन्देश डाला है।

''सार संसार'' का आपका उत्साह देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अमृत मेहता, आप एक सच्चे हीरो हैं। डागमार मारकोवा, आपको भी सहस्त्र धन्यवाद! हम जैसे हिन्दी पाठकों की उदासीनता के बावजूद आप पूरी लगन से अंक पर अंक निकाल रहे हैं, सिर्फ भाषा के लिए अपनी दीवानगी और प्यार के कारण। आज ही मुझे आपका नया अंक मिला है, कोई चन्दा नहीं देना पड़ा, सिर्फ यह लिखना काफी था कि मुझे पत्रिका में दिलचस्पी है। सचमुच बहुत द्रवित हुआ हूँ! आपको सलाम!

**कुशल खंधार, मुम्बई**

मुझे ''सार-संसार'' का नियमित पाठक होने का अलग गर्व महसूस होता है, वह इसलिए कि यह मेरी मातृभाषा और भारतीय भाषाओं के साहित्य की परिधि से बाहर संसार भ्रमण करने का और बहुत कुछ देश-दुनिया की साहित्यिक गतिविधियों में पाठक की हैसियत से शामिल होने का मौका देती है सश्रद्धेय अमृत मेहता जी की तपस्या और परिश्रम के फलस्वरूप यह पत्रिका विश्व साहित्य को हिन्दी के प्रेमियों तक पहुँचाकर साहित्य-सेतु के स्तम्भ स्थापित कर रही है। जनवरी-मार्च, 2017 अंक से और चार नए अनुवादकों की सेवा और साधना पत्रिका को उपलब्ध होना ही पाठकों के लिए अनमोल उपलब्धि है। पाठक की हैसियत से अनुवादकों का तहेदिल से स्वागत है। यह कम खुशी की बात नहीं है कि इस अंक से पत्रिका 21वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। संसार के साहित्य को हिन्दी से जोड़ने के पुनीत कर्म में 92

अनुवादकों का योगदान बड़ी उपलब्धि है, मैं ऐसा मानता हूँ। इस अंक में सीरियाई कथा अकेली और त, युर्दानी कथा लाल मुर्गा, रूसी कथा 'तारा और बिन्दु' तथा जर्मन कथा 'बाल सेना का कूच' में विषय-वस्तु तथा पृष्ठभूमि अपनी-अपनी अलग-अलग है, लेकिन अनुवादकों ने हिन्दी में इस रूप में परोसा है मानो हिन्दी में ही लिखी गई हों। इसलिए ख़ास तारीफ तो उनके पक्ष में बनती ही है। जर्मन नोबेल विजेता ग्यूंटर ग्रास की जीवनी ''बीतते समय के विरूद्ध लेखन'' में पठन का विशेष मजा है। ग्रीक कविताओं के अनुवाद 'चाँद लाल है' और 'तुम मुस्कराओ' के प्रकृति के खेल का आनन्द लेकर मुस्कराने का सन्देश देती हैं।

**बिर्ख खडका डुवर्सेली, दार्जिलिंग**

गत सप्ताह आपने कुछ पत्रिकाएँ व पुस्तकें दीं। आभार। सर्वप्रथम बच्चों की कहानियाँ...पढ़ी। इनके स्विस लेखक पीटर विक्सल का साक्षात्कार कई अर्थों में अनूठा एवं रोचक है। वह लोकतन्त्र के पक्षधर हैं किन्तु घोर राष्ट्रवाद के विरोधी। वह भावुकतापूर्ण लेखन को पसन्द करते हैं। सबसे रोचक बात यह कि वह पुनर्जन्म नहीं लेना चाहेंगे। यदि दोबारा इस धरती पर आना भी चाहेंगे तो भारत या अफ्रीका के किसी मिशनरी मठ में। अर्थात उनका आधुनिक सभ्यता से मोहभंग हो चुका है और वह भारतीय दर्शन (ख़ास तौर पर 'नेता नेति' अथवा 'चरैवेति-चरैवेति') के प्रति आकर्षित हैं या फिर अफ्रीकी अनभिज्ञता एवं फक्कड़पन के प्रति। उनकी कहानियों के मुख्य पात्र आम व्यक्ति होते हुए भी असाधारण व्यवहार करते हैं। शायद वे अस्तित्ववाद या फिर अनस्त्त्ववाद के ऊहापोह में पड़ अर्धविक्षिप्त हो चुके हैं, पर हैं मजेदार विचारोत्तेजक भी। 'धरती गोल है' का 80 वर्षीय बूढ़ा स्वयं जानने की कोशिश करता है कि धरती गोल है या नहीं तभी वह पोत, वाहन, रस्सियाँ या सीढ़ियाँ लेकर ऊलजुलूल हरकतें करता रहता है। कहानी ''मेज़ तो मेज़ होती है'' मार्मिक होते हुए भी बच्चों की तरह हँसने पर मजबूर करती है। सिफ ं नयेपन की धुन में चीजों के नामों के उलटफेर में कितना हास्य पैदा होता है के अलावा चीज ों की व्यर्थ निर्रथकता तथा चीजों के पीछे एक ही आत्मा के सूक्ष्म संदेश भी निहित हैं इसमें। 'अमेरिका तो है ही नहीं' एक अजब किस्सा है, जिसमें कोलम्बस के सन्देह को रेखांकित किया गया है कि उसने क्या खोज निकाला यानि अमरीकी जीवन शैली को ही नकार दिया गया है। 'आविष्कारक' में पहले से ही अविष्कृत चीज ों के नये आविष्कारों की खिल्ली यानि नयी-नयी तकनीकी खोजों के जुनूनी दावों की खिल्ली उड़ाई गयी प्रतीत होती है। 'याददाश्त...' वाली कहानी में सब प्रकार के हिसाबी-किताबी ज्ञान को आड़े हाथों लिया गया है, जिसमें रेल टाइम टेबल की विस्तृत सूचनाएँ तथा शहरों की इमारतों की सीढ़ियाँ गिनने की सनक एक ख़ौफ नाक प्रतीक के रूप में उभरती



है। योडोक ...वाली कहानी में हरेक चीज में योडोक (जैसे कण-कण में भगवान) की मौजूदगी की पैनी व्यंग्यात्मक धार वाली धारणा का सन्देश है या उस धारणा का समर्थन है समझ नहीं आया। अन्तिम कहानी 'एक आदमी...' में सब कुछ जान लेने की मूर्खता का मजाक उड़ाया गया है, क्योंकि ज्ञान अनन्त है पर मनुष्य बुद्धि सीमित।

हो सकता है मैं विदेशी साहित्य से अनभिज्ञ होने के कारण मूल्यांकन में सफल न हुआ हूँ। उपन्यास 'एक जोकर की यादे' जितना पढ़ पाया हूँ उसमें भी जीवन के कथित उच्च मूल्यों को नकारते हुए ठोस वास्तविक जीवन की भयानक सच्चाइयाँ डराती हैं। कैसे बचपन में नायक एक ट्रेन से दूसरी ट्रेन फलाँगता हुआ आख़िर में एक सर्कस के तम्बू में त्राण पाता है जहाँ आइने के सामने खड़ा एक नंगा पात्र भी है तथा गुलामी की विभीषिकाएँ भी...इस विषय पर फिर कभी। कुशल, सुरम्य अनुवादों के लिये साधुवाद।

**अमृतलाल मदान, कैथल (हरि)**

# 1953 से 1956 तक बर्लिन प्रवास

**फ ोल्कर लोएटाउस** **अनुवाद : अमृत मेहता**

ग्रास श्यूलरश्त्रासे पर एक फर्नीचरयुक्त कमरा किराए पर ले लेते हैं, और पहले ही दिन हार्टुंग की क्लास के स्टूडियो में भी अपना सामान सजा देते हैं एक फ्राइंगपैन, प्याज और एक पाउंड हरी हिलसा मछली, जो बाद में उनकी बिलकुल कम खर्च में बनने वाली मुख्य खुराक हो गई थी, जिसे वह क्लास में रखे एक बिजली के चूल्हे पर पकाया करते थे। यह मछली उन्हें 35 फेनिष प्रति पाउंड के भाव से मिलती थी। मछली पकाने से पहले वह उसका चित्र बनाया करते थे, और अपने नए शिक्षक से उनका पहला वार्तालाप पहले पाककला और फिर चित्रकला पर हुआ : "इनके काँटे नहीं हैं। ध्यान से देखो तो आभूषण ढूँढ़ निकाले हैं। हिलसा एक खोज से भी कुछ अधिक होती है। प्रकृति और वह भी चेतन।"

"देखो, ऊपर-ऊपर से टटोलो नहीं" मंच पर कृत्रिम सजीवता दिखाने की बजाय बेहतर है कि कुछ हद तक निष्प्राणता आने दो। "सामग्री ठंडी रखो।" जो फार्मूले हार्टुंग छात्रों की घुट्टी में डालते थे और जो उनके छात्र ग्रास को अभी भी याद हैं, वे कुल मिलाकर और विशेष रूप से ग्रास की कविता पर भी लागू होते हैं हार्टुंग से ग्रास कला को हस्त-शिल्प के रूप में समझने की शिक्षा पाते हैं। शिक्षक और छात्र में मतभेद केवल ग्रास द्वारा मूर्तकला का पक्का समर्थन करने पर होते हैं अमूर्त कला को वह अस्वीकार करते हैं यह एक ऐसा झगड़ा था, जिसने तब होफ र-गुट और विल ग्रोमन के मतभेदों के कारण अकादमी को दो गुटों में बाँट दिया था, जिसमें मूर्त तथा अमूर्त दोनों कलाओं पर काम करने वाले हार्टुंग अनिर्णय की स्थिति में डाँवाडोल थे। अमूर्त तथा निर्बाध कला का ग्रास द्वारा जीवन-पर्यन्त विरोध इस कारण था कि उन्हें इस झगड़े में कला के क्षेत्र में होने वाले आम झगड़ों से ज यादा ही कुछ नज र आ रहा था : "एक ऐसे देश में यह वास्तविकता को पहचानने या नज रअन्दाज करने का प्रश्न था, जो पराजित था, विभाजित था, और जिस पर नरसंहार के उत्तरदायित्व का बोझ था और जो इसलिए हर उस चीज . को दबाना चाहता था, मैं कहता हूँ, अमूर्त बनना चाहता था, जो अतीत की याद दिला सकती हो, और जो भविष्य में पलायन करने से रोक सकती हो।"



1956 में ग्रास को अपने शिल्प की उच्चतम डिग्री मिल जाती है, उनकी कला की शिक्षा औपचारिक रूप से समाप्त हो जाती है। जब ग्रास अन्ना की बैलेट नृत्य की शिक्षा के दौरान पेरिस जाते हैं, तो अभी भी हार्टुंग की क्लास में उनकी प्लास्टर ऑव पेरिस की अनेक मूर्तियाँ खड़ी होती हैं। 8 मई, 1957 को उनके मित्र गेरोन फेयरनबाख़ उन्हें लिखते हैं कि वह छात्रों की नई पीढ़ी के लिए स्थान बनाना चाहते हैं। फिर भी ग्रास की हार्टुंग के साथ, 1976 में उनकी मृत्यु तक, बड़ी गहरी मित्रता बनी रहती है।

उनके ड्युस्सलडोर्फ के काल में चित्रकार और मूर्तिकार लुडविष गाब्रीएल श्रीबर के साथ हुई जान-पहचान भी जीवन भर की गहरी मित्रता में बदल जाती है। ग्रास युद्धकाल और युद्धोत्तरकाल में जिन चीज ों पर ध्यान नहीं दे सके थे, उन्हें पाने के लिए उन्हें जिन परामर्शदाताओं की ज रूरत थी, श्रीबर उनमें पहले थे। श्रीबर बहुत विद्वान हैं और ग्रास को वह वे पुस्तकें पढ़ने की सलाह देते हैं, जो उनके लिए बाद में महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। उदाहरणतयः चार्ल्स दे कोस्टर्स की 'ओयलेनश्पीगल।' 1975 में जब श्रीबर की मृत्यु होती है, तब ग्रास 'फ्लाउंडर' लिख रहे होते हैं, तो वह उनके लिए सुन्दरतम स्मारक बनाते हैं ग्रास के लिए मित्रताएँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और वह श्रीबर को आदिमित्र 'लुड', 'हर युग में मित्र' का दज f देते हैं, और 'फ्लाउंडर' में उसे श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। एक और महत्त्वपूर्ण मित्रता उन्हें चित्रकार और रेखाचित्र कार्ल ओप्परमन के साथ जोड़ती है, जिनसे उनका परिचय 1952 में उनकी पेरिस-यात्रा के दौरान हुआ था और जो 1950 में बर्लिन में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

तामपत्र पर खोदना ग्रास ने ड्युस्सलडोर्फ में पांकोक से सीखना शुरू किया था, हार्टुंग की क्लास में अश्ममुद्रण उसमें और जुड़ गया। बर्लिन प्रवास में पक्षियों, मुर्गियों, मुर्गों के रेखाचित्र और चित्र ग्रास के चित्रण में पहली बार मूलभाव बनकर उभरे, जो अकेले ग्रास की ही खूबी दिखाई देती है, और जो फिर उनके द्वारा अपनी कविता में भी परखे जाएँगे। और यह स्पष्ट होगा कि ये मूलभाव आधिकारिक कलाक्षेत्र की बजाय साहित्य के क्षेत्र में अधिक सफल होंगे; कलाकार संघ की जूरी ग्रास के चित्रों को अस्वीकार कर देती है, क्योंकि वे मूर्त वस्तुओं के हैं। तीस वर्ष बाद ग्रास कटुतापूर्वक तब की अखिल-जर्मन प्रवृत्ति के बारे में शिकायत करते हैं : "हालाँकि जर्मन जनवादी गणराज्य समाजवादी यथार्थवाद के समय में हर दूसरी चीज को यथार्थ का रूप देता था, फिर भी, विपरीत वादों के बावजूद एक अखिल जर्मनी सहमति थी; अमूर्तता की जय थी। जो यहाँ या वहाँ वस्तुओं के चित्र बनाता था, यथार्थ से झगड़ता था, जूरियों से अस्वीकृत होता था।"

फिर भी एक निजी गैलरी में उनकी कलाकृतियाँ प्रदर्शित होती हैं। 1955 की

पतझड़ में ही वह लुत्स एंड मेयर, श्टुट्गार्ट में "रेखाचित्रों और मूर्तियों के एक छोटे से, लेकिन सुरुचिपूर्ण संग्रह की प्रदर्शनी" प्रस्तुत करते हैं, 'फ्रांकफुर्ट आलगेमाइने समाचारपत्र' की दृष्टि में। 21 अक्तूबर, 1955 को उद्घाटन के अवसर पर हार्टुंग और ग्रास के एक मित्र एच. एल. ग्रेवे व्याख्यान देते हैं, जो उनके काम से बर्लिन से ही परिचित थे। वह उनकी तब तक अप्रकाशित कविता 'पवन-मुर्गियों के गुण' उद्धृत करते हैं, और युवा कलाकार की 'अस्तित्त्वात्मकता की गहरी समझ' की प्रशंसा करते हैं। 'फ्रांकफुर्टर आलगेमाइने' अखबार में 21 नवम्बर, 1955 को प्रदर्शनी की एक लम्बी तथा सकारात्मक समीक्षा प्रकाशित होती है। एक रेखाचित्र 'ऊँची इमारतों के सामने टिड्डे' को देखकर लगता है कि मूलभाव के रूप में उनकी कविता 'नबी का भोजन' के साथ छापा गया था और ग्रास की तब तक की साहित्यिक सफलताओं को मान्यता दी गई थी; ये थीं 1955 में 'ग्रुप 47'[1] के समक्ष और एक जर्मन-आट्रियाई-स्विस-कवि-सम्मेलन में कवितापाठ।

बर्लिन में ग्रास की भेंट पुनः अन्ना श्वार्त्स से होती है, जो इसी बीच बैलेट की उच्च शिक्षा के लिए वहाँ आ गई है। दोनों प्रेमपाश में बँध जाते हैं और 1954 में विवाह कर लेते हैं। उसी वर्ष कैंसर से मृत्यु होने से पहले हेलेने ग्रास भी अपनी बहू से मिल लेती है। अन्ना श्वार्त्स एक सम्पन्न परिवार से है, जिसका लेंत्सबुर्ग में धातु और लोहे का व्यापार है, और एक बार ग्रास ने साफ -साफ बताया था कि इस पारिवारिक मेल का उनके लिए क्या महत्त्व था, "एक उदार, खुले दिमाग का परिवार, जिन्होंने मेरे पास कुछ न होते हुए भी मुझे स्वीकार किया, झेला, शायद इस अपेक्षा से कि चलो, हमें इन्हें किसी तरह घसीटकर ऊपर लाना होगा। और इससे मेरा निम्न मध्यवर्गीय आत्मसम्मान जागा... और यह मेरे लिए एक प्रेरणा थी, मेरे क्रोध की प्रेरणा के साथ मेरी अस्तित्त्ववात्मक प्रेरणा।"

युवा दम्पती बर्लिन के ग्रूनेवाल्ड क्षेत्र में 35, क्योनिग्सआले के बमों से खंडहर बने एक बंगले के तहखाने में बने फ लैट में रहना शुरू कर देते हैं। उस मकान के शानदार ढंग से बन जाने पर वहाँ प्रसिद्ध आस्ट्रियाई लेखिका इंगेबोर्न बाख़मन काफ ी समय रहेंगी। लेकिन खंडहर का तहखाना 'वाइल्ड फील्ड' में फोंटी के पिता के फ लैट के रूप में पुनर्जन्म लेगा। 1956 में पति-पत्नी 168, ऊलंटश्त्रासे रहने चले जाते हैं।

1. 10.9.1947 को म्यूनिख में गठित जर्मन लेखकों का संगठन, जिसका मुख्य उद्देश्य था समकालीन परिदृश्य का विवेचन। वार्षिक सम्मेलनों में "ग्रुप 47 साहित्य पुरस्कार" दिया जाता था। 1977 में इसे समाप्त कर दिया गया था।



अन्ना अनजाने में ग्युंटर ग्रास की साहित्यिक ख्याति की नींव डालती है, जब वह अपनी बहन वाल्ट्राउट के साथ उनकी कविताएँ दक्षिणी जर्मन रेडियो की एक कविता प्रतियोगिता में भेज देती है "मेरी सहमति से मज ाक-मज ाक में ही।" ग्रास को क्रिस्टीना ब्रुस्टा और वीलंट शमीट के बाद तृतीय पुरस्कार मिलता है। 150 मार्क और श्टुट्गार्ट आने-जाने का विमान का टिकट। उसके परिणाम महत्त्वपूर्ण हैं। जूरी का एक सदस्य ग्रुप 47 का भी सदस्य है और वह जूरी के अध्यक्ष हंस वेर्नर रिष्टर का ध्यान इस प्रतिभाशाली युवा कवि की ओर आकर्षित करता है। रिष्टर इस ग्रुप के संस्थापक थे और इस स्वच्छन्द संगठन के तीस वर्ष के कार्यकाल में किसी ने भी उनकी अध्यक्षता पर कभी प्रश्न नहीं उठाया था। संयोगवश इसी वर्ष ग्रुप की वर्ष की प्रारम्भिक बैठक 13 से 15 मई तक बर्लिन के हाउस रूपनहोर्न में हो रही थी। जब ग्रास श्टुट्गार्ट से लौटते हैं तो पहले ही एक तार आया होता है, जिसमें उन्हें रिष्टर ने निमन्त्रण भेजा है। वह जाते हैं, कविता पाठ करते हैं, और जैसे उन्होंने 'पवन मुर्गियों के गुण' में लिखा है, उन्हें प्रथम प्रयत्न में ही सफलता मिलती है। उन्हें केवल तुरन्त इस ग्रुप का सदस्य ही नहीं बना लिया जाता हंस वेर्नर रिष्टर हर वर्ष ग्रुप का पत्रों और पोस्टकार्डों द्वारा पुनर्गठन करते थे बल्कि प्रकाशक भी उन्हें बुलाते हैं, लेकिन सिर्फ दो चीज ों को ठोस रूप मिलता है। वाल्टर ह्योलरर, फ्रैंक्फर्ट के जर्मनशास्त्री, लेखक और प्रकाशक की एक वर्ष में ही सर्वाधिक सम्मानित तथा प्रभावशाली बन चुकी साहित्यिक पत्रिका 'आक्त्सेंटे' के सम्पादक, उनके साथ टैक्सी में नगर को लौट रहे हैं। वह उनकी कविताएँ अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने का वचन देते हैं, जिनमें उनकी रेडियो द्वारा पुरस्कृत 'सुप्त कुमुदनियाँ' भी हैं, हालाँकि ग्रास गुप 47 के समक्ष बाँची गई कविताओं के सम्बन्धकारी लाक्षणिक भावों को कबके त्याग चुके हैं। यह टैक्सी-यात्रा एक अद्भुत मित्रता की शुरुआत है। पाँच वर्ष बड़े ह्योलरर ग्युंटर ग्रास के एक और गुरु बन जाते हैं जो उन्हें विशेषकर समकालीन साहित्य से परिचित करवाते हैं, जिस पर उन्हें अधिकार है, क्योंकि न केवल वह 'आक्त्सेंटे' प्रकाशित कर रहे हैं, बल्कि पेशे से जर्मनशास्त्री भी हैं। इसके अलावा वह बाद में, पेरिस में, ग्रास को प्रूफ पढ़ना सिखाते हैं, साथ ही प्रूफ -रीडिंग के चिह्न भी।

'फिशर' और 'ज ूअरकांप' से बात आगे न बढ़ने पर ग्रास को प्रसन्नता है, क्योंकि कुछ सप्ताह बाद उन्हें लुख्टरहाँट प्रकाशन की बर्लिन शाखा के डॉ. पीटर फ्रांक से एक पत्र मिलता है। उन्होंने भी ग्रास का कविता-पाठ सुना था और प्रभावित हुए थे, लेकिन भीड़-भाड़ में वह लेखक के निकट नहीं पहुँच पाए थे। अब वह एहतियातन पूछते हैं कि क्या ग्रास के पास समय है। वह ग्रास को उनके तहखाने वाले फ लैट में मिलने जाते हैं, और दोनों एक रेखाचित्रों युक्त कविता-संग्रह की

रूपरेखा की बात करते हैं, और फ्रांक उन्हें शब्द और चित्रों से पुस्तक तैयार करने के लिए पर्याप्त समय देते है। "पहले के वर्षों में जबकि चित्र और लेखन अलग-अलग रास्तों पर जा रहे थे, अब दोनों विधा पहली बार एक साथ विलक्षण मूर्तरूप ले रही थीं; एक ही स्याही से दोनों जी रही थीं।" कविता पर रेखाचित्र इतने अधिक थे कि संग्रह में उनके लिए कविता के साथ जगह पूरी नहीं पड़ रही थी, अतः उनके लिए एक विस्तीर्ण ग्राफीय खंड पाठ के साथ बनाया गया, जो बाद में 'फ्रॉम दी डायरी ऑव द स्नेल', 'फ्लाउंडर', 'रैट' और 'ए वाइड फील्ड' में भी किया गया। उन्हें समान दज र्ा देने के लिए उन्हें स्पष्ट रूप से विषय-सूची में कविताओं के बीच रखा गया था।

संग्रह से स्पष्ट होता है कि ग्रास की कला के क्षेत्र में चरणबद्ध विकास, 'कूट-संकेत 1945' से 'आउश्वित्स को लिखना' तक में संसाधन पूर्ण हो चुका है, उसमें कविताएँ हैं, जो स्वाधीनता का गुणगान करती हैं और "हाथों से कुछ करने की अनिवार्य इच्छा" को इस दस्तावेज द्वारा प्रमाणित करती हैं, साथ ही वे दस्तावेज हैं "सीसे जैसे बोझिल", युद्ध और आउश्वित्स और ऐसे ही अन्य कई तथ्यों से दो-दो हाथ होने के, जो जीवन और संसार की दुर्व्यवस्था में अपना रास्ता ढूँढ़ते हुए अस्तित्त्ववादी सत्य को खोज लेते हैं। सापेक्ष सम्बन्ध स्थापित करने में निपुण मूर्तिकार ग्रास ने विषयानुसार कविताओं को संग्रह के आरम्भ में, मध्य में और अन्तिम भाग में रखा था।

'पवनमुर्गियों के गुण' कविता उनमें सर्वाधिक प्रभावशाली थी। इसने केवल संग्रह को शीर्षक ही नहीं दिया। ग्रास के मूल संकरण के अलावा अँग्रेज ी पुस्तक में भी इसे जैकेट के पल्ले पर आदर्श के रूप में आरम्भ में रखा गया (जिससे एक विचित्र स्थिति यह उत्पन्न हुई कि 'टिन ड्रम' के बाद निकलने वाले इसके दूसरे संस्करण में वहाँ लेखक परिचय था, जो ग्रास के प्रसिद्ध हो चुकने के कारण आवश्यक बन गया था, अतः इस संस्करण में पुस्तक का शीर्षक देने वाली कविता ही गायब थी।)। इसके अलावा ग्रास द्वारा स्वयं डिजाइन तैयार किए गए जैकेट पर 'पवनमुर्गी' और एक 'पवनमुर्गा' भी है यह ग्रास द्वारा पहले बार-बार इस्तेमाल की जाने वाली शब्द रूपक की बोझ सहने की क्षमता की जाँच करने की विधि है, जिसके अन्तर्गत वह उसका 'अनुवाद रेखाचित्र में करते थे।' कविता करने पर एक कविता है। एक ओर जहाँ वह एक कुंजी सप्लाई करते हैं, वहीं वह कविता द्वारा बूझे जाने के अधिकार को भी सम्मान देते हैं। 'मोर्गेनश्टर्न'[1] की तरह ग्रास ने एक 'अपरिपक्व अंडे' से एक पवन-मुर्गी निष्कर्ष की तरह निकाली है, जिसमें पवन से निकली मुर्गी का अर्थ

1. सुप्रसिद्ध जर्मन कवि क्रिस्टिआन मोर्गेनश्टर्न।



लगाया जा सकता है, जो प्रारम्भिक पंक्तियों से स्पष्ट होता है। यह 'पवन' साथ ही योहान्नेस 3.8 की पवन के मानिन्द पवित्र आत्मा है, जीव, जो लहराता है, जहाँ चाहता है उड़ जाता है, कल्पना, जिसने इन मुर्गियों को जन्म दिया है और जो आगे से उसी का मूर्तरूप हैं। रूपालंकार जैसे 'एक सहनशील सतह, छोटी इबारत/कोई पंख विस्मृत नहीं, वर्णलोप चिह्न भी नहीं, बीच की दीवारें पलटें/तो नया अध्याय निकल आता है' इत्यादि 'पवनमुर्गियों' को कविता अथवा काव्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस रूप में वे दिन-प्रतिदिन के प्रयोग के गद्य के विपरीत है, 'जो डाकिया हर सुबह मेरे दरवाज ा पर डाल जाता है', उसके बजाय 'वे सपनों की सख्त छाल का तिरस्कार नहीं करते।' ''उनके बारे में कुछ निश्चित नहीं किया जाता, वे 'दरवाज ा खुला' छोड़ देती हैं, वे अन्योक्ति भी हैं, कुंजी भी हैं, फिर भी वहीं रहती हैं एक चित्र, जो अपना अधिकार माँगता है और "यदा-कदा काँय-काँय करता है।'' क्योंकि वे यूँ हैं, इसलिए 'मैं' उनके निकट पहुँचता है और अपनी कल्पनाशक्ति की सम्पन्नता पर गर्व करता है। उन्हें 'गिनना' नहीं, क्योंकि वे अनगिनत हैं और निरन्तर संख्या में बढ़ रही हैं।"

संग्रह के मध्य की कविता 'पोलिश ध्वज साभिप्राय' आउश्वित्स के 'सीसे जैसे बोझ' की शिकायत करती है। सम्बन्धित संकेत शब्दों में एक शब्द 'वारसा' है, जो भेड़ियों के पीछे कदम रखेगा। ध्वज के रंग 'सफे द' और 'लाल', जो 'टिन ड्रम' में ओस्कार के ढोल के रंग के रूप में महत्त्व रखते हैं, दूसरी ओर अपने परिवर्तित रूप में एक ओर तो 'क्रोध भरे विरोध' और दूसरी ओर शरद्काल में मृत शरीर की ऐंठन में संकेन्द्रित तथा कूट-भाषा की शक्ल में पोलैंड के भाग्य को अभिव्यक्ति देते हैं पोलैंड के विभाजन से होकर 1943 और 1944 के वारसा के विद्रोह तक, जिसके बाद जर्मनों ने नगर पर लगातार बमबारी करके उसे नष्ट कर दिया था।

संग्रह की अन्तिम कविता 'धातु का संगीत' हम सबके जीवन को मृत्यु के लिए जीवन का नाम देती है, वह मृत्यु जो तभी अपना काम शुरू कर देती है, जब हम जन्म लेने से पूर्व अपने अस्तित्त्व की अनन्त शान्ति से 'बाहर धकेल दिए जाते' हैं। प्रथम छन्द में गतिशून्य, संकेतहीन निद्रा और 'आने-जाने' के स्वप्न के अनन्त 'तब' से जागने के समयनिष्ठ 'तब' में प्रवेश होता है, दूसरे छन्द में बाहर धकेल दिया जाना, तीसरे में 'आज', और चौथे और पाँचवें छन्द में इसके विपरीत। हम प्रवेश करते हैं जीवन में शिशु के और जीवन के हमसफ रों के संकेत पर, 'पथ से विचलित अश्वारोही सैनिक' की अर्थहीनता के अथवा मृत्यु के संकेत पर, और समय में जीवन जीने का अर्थ है अतीत में जीना, जिसमें गुलदस्ते के लिए काटे हुए फूल और कॉफी में घुलती चीनी लगभग बारोककालीन चित्रों की तरह जीवन की दृश्यावली का अंग बन जाते हैं। जीवन एक पलायन बन जाता है, जिसमें हर चीज के लिए समय

कम है, जिसमें निश्चयात्मक अतीत लम्बा हो जाता है, एक सैकिंड का वो हिस्सा, जब पीते हुए 'बीयर में छुच्छी सी' बनती है, वो मिनट, जिनमें हम उन 'स्त्रियों' को सन्तोष प्रदान करते हैं, "जिनके पास बहुत कम समय है", वो साल, जिनमें एक कोट हमारे शरीर के आकार की नकल होता है, वो दशक, जिनमें हमारी लाश पर एक कब्र का अधिकार होता है, जो उसका इन्तज ार कर रही होती है, जिसके लिए "भुगतान और लोग करते हैं।" प्यार धुलाई के कपड़ों की तरह दराज ों में पड़ा होता है। यहाँ तक कि चूल्हे भी स्वार्थहीन ऊष्मा देने से इनकार कर देते हैं, यहाँ तक कि संचार का साधन टेलीफोन भी जवाब दे जाता है और हमें अपना 'व्यस्त संकेत' दिखाता है। 'सन्तोषण' केवल अस्तित्त्व की इस क्षणिकता को स्वीकार कर लेने में है।

इस तरह ग्रास की पहली प्रकाशित पुस्तक में प्रमुख स्थानों पर तीन कविताएँ हैं, जो आज भी जीवन के सत्य को परिलक्षित करती हैं, हाँ, उनमें उनकी काव्यात्मक स्वतः स्पष्टता के आधार को तनिक संशोधित किया जा सकता है। सर्जनात्मकता के प्रति अपना परिणामस्वरूप मन्तव्य प्रकट करना, जो 'हाथों से' कुछ करने की प्रेरणा देता है और परिणामस्वरूप कुछ अतिरिक्त, सोच के अनुभवात्मक उद्देश्यपूर्ण जगत को जन्म देता है जर्मन पाप और जर्मन कर्ज तथा एक अव्यवस्थापूर्ण विश्व में एक नश्वर जीवन को 'मित्रतापूर्वक' सहन करने का स्वीकरण। यह अन्तिम तत्त्व ग्रास के सम्पूर्ण कृतित्त्व में अपरिवर्तित रहता है। आज तक "वह अपने इस कथन पर दृढ़ हैं कि हम एक अव्यवस्थापूर्ण परिवेश में जी रहे हैं, जिसे सिसीफुस[1] के काम के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।" जर्मन पाप को बाद में लिखी गई रचनाओं में मनुष्यों के पाप को विस्तारण में प्रस्तुत किया गया है, जैसे 'फ्लाउंडर' में पुरुषों द्वारा स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा, 'फ्लाउंडर', 'हेडबर्थ्स' और जीभ दिखाना' में तीसरे जगत के विरुद्ध हिंसा, अतिथि बने मनुष्य द्वारा उसे शरण देने वाली धरती के विरुद्ध हिंसा 'रैट' तथा 'डेड वुड' में।

कविताओं के बाद एक के बाद एक एकांकी और नाटक प्रकाशित हुए। 1955 से 1957 तक ग्रास की रुचि मुख्य रूप से इन विधाओं में रही। "मैं मुक्त लिख रहा था", ग्रास अपने बर्लिन प्रवास के दिनों में अपनी "कार्यशाला-रिपोर्ट" में लिखते हैं। ग्रुप 47 में उन्हें एक साहित्यिक परिवार मिल गया है, 14 से 16 अक्तूबर के पतझड़-सम्मेलन में, जो ट्यूबिंगन के बेबेन-हाऊज न महल में हुआ था, उन्हें बहुत वाहवाही मिलती है, इस बार गद्य-पद्य दोनों के लिए। इंगेबोर्ग बाखमन, हंस मागनुस ऐंत्संसबेर्गर और पेटर र्‌यूमकोप्फ में उन्हें अपनी पीढ़ी के कवि मिल गए हैं, जो

1. ग्रीक पौराणिकी का पात्र, जो एक भारी चट्टान को पहाड़ की चोटी पर लादकर ले जाना चाहता है, लेकिन चट्टान हमेशा फिर-फिर नीचे गिर पड़ती है। असफलता का प्रतीक।



"स्पष्टता से लेकर अस्पष्टता तक निश्चित रूप से जानते थे" कि उनकी जीवनी "अन्य सामान्य सूचनाओं सहित, वानज े-सम्मेलन की तिथि के साथ दर्ज हो चुकी है।" उनकी प्रगति के वह आगे भी मैत्रीपूर्ण और आलोचनात्मक ढंग से भी भागीदार हैं, और 1992 में आकर जब वह चतुर्दश-पदी-शृंखला 'नवम्बरलैंड' पर काम कर रहे थे तो कविता की इस शैली से अधिक परिचय न होने के कारण उन्होंने अपने बरसों पुराने मित्र पेटर र्‌यूमकोफ से शिल्प के बारे में परामर्श माँगा था। चूँकि कला पर उनकी पकड़ में शिल्प का बड़ा हाथ था, वह ग्रुप 47 के निष्ठावान सदस्य बने रहे, जिनके लिए कविता पर किसी भी बहस में 'बनाना' एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

1956 की ग्रीष्म में अन्ना और ग्युंटर ग्रास पेरिस जाने का निर्णय लेते हैं, जहाँ अन्ना रूसी बेलेटमास्टर मैडम नोरा के अधीन प्राचीन बैलेट की शिक्षा पूरी करना चाहती है। बर्लिन में पहले उसने विगमन-स्कूल के अभिव्यक्ति-नृत्य का अध्ययन किया है ये अनुभव ग्रास के कला तथा काव्य के सिद्धान्तों पर लिखे गए निबन्ध 'वैलेरीना' में काम आए थे। ग्युंटर ग्रास को काम करने के लिए एक शान्त वातावरण चाहिए। उनके सामान में इस बार बैलेट के पादत्राण और संगतराशी के औज ार, रेखाचित्र, दृश्यावलियाँ, एकांकी तथा नाटक थे और ग्रास के मस्तिष्क में संज्ञाशून्य परिप्रेक्ष्य से एक ऐसे उपन्यास का प्लॉट था, जो स्तम्भनिवासी तपस्वी के दिनों से उनके भीतर कुलबुला रहा था। पेरिस जाते हुए वह रास्ते में कोलोन में उतर जाते हैं और पाउल शाल्युक से मिलते हैं, जो उन्हें इस अस्पष्ट विचार को कार्यरूप में परिणित करने का प्रोत्साहन देते हैं।

# पेरिस से पड़ोसी नगर में

**आंद्रेयास वेबर** **अनुवाद : अमृत मेहता**

पहले कुछ मिनटों के बाद ही मैं सब कुछ जान गया था।

पहली अक्टूबर को जब मैं बैरकों के पिछले रास्ते से दूधिया काँच के दरवाज े से दाखिल हुआ तो 3 मीटर की दूरी पर खड़ा वर्दी पहने एक ठिगना-सा आदमी गुस्से में मेरे ऊपर चिल्लाने लगा, ''जल्दी करो।''

उस आदमी को चिल्लाते देखकर मुझे हँसी आ गई और आस्ट्रियाई सेना में फौज ी के रूप में भर्ती होने के पहले दिन की संध्या को मैं अपनी फौज ी खाट पर हाथों की कैंची बनाए पीठ के बल लेटा हुआ छत को देखते हुए याद कर रहा था कि 'शान्तिवादी कवि' के रूप में जाने जाने वाले मेरे पिता ने कितनी बार मुझे सलाह दी थी कि मैं फ ौज में भर्ती होने से मना कर दूँ और तभी आरम्भ की गई एक योजना के अन्तर्गत नागरिक सेवा करने की सम्भावना का लाभ उठाऊँ। मैंने न तो अपने पिता को और न ही इस विचार को गम्भीरतापूर्वक लिया था, और इस दिन के अन्त में बैरक की छत को घूरते हुए समझ रहा था कि मेरे पिता की सैन्य-सेवा के प्रति घृणा उचित ही थी दूसरी ओर यह धारणा कुछ अजीब तो थी, आख़िरकार तो मेरे पिता स्वयं एक सरकारी नौकर थे और वर्दी भी पहना करते थे। अचानक मुझे उनकी कमी महसूस होने लगी। अपने विचारों में उन्हें यह बताकर कि यहाँ सब कुछ कितना हास्यास्पद था, मैं नींद में डूब गया।

अगले दिन, सप्ताह और महीने हथियारों को खोलने, साफ करने, व्याख्यान-कक्ष में फौज ी उसूलों को सीखने, लड़ने का अभ्यास करने, निशाना लगाने और खेल-कूद में बीत गए। कमरों के दरवाज ों के बाहर सैनिकों के नामों की एक सूची टँगी हुई थी, नामों के आगे उनकी कोटि लिखी हुई थी। डेविड क्योनिष मध्यम कोटि का था। बैरक के सामने एक अनायुक्त अफ सर सबके नाम पुकारता था और जब बुलाया गया फौज ी 'हाजि र जनाब' कहता था तो तब मैं नटाली के बेटे को नहीं जानता था। तीसरे हफ ते में जाकर जब उसने सहमति जताते अपने साथियों से यह कहा कि कुछ लोगों को यहाँ पर नहीं होना चाहिए था, क्योंकि उनकी सोच दूसरों की लड़ने की इच्छा को 'नष्ट करती है' तो मुझे साथ वाली क्लास वाले क्योनिष का ख्याल आया



जिसने एक बार स्कूल प्रिंसिपल से जाकर कहा था कि उसे भी वॉलीबाल टीम में लिया जाए।

फिर वह एक सहायक की मदद से लकड़ी की एक पट्टी पर उभरा अपने जन्म-स्थान के प्राकृतिक दृश्य का चित्र लेकर आया। अपने पिता की मदद से, जो रिज र्व सेना में कर्नल थे, उसने अपने क्षेत्र की रक्षा को मज बूत, गहरा बनाने के लिए पढ़ाई में सिखाए गए तरीकों को इस्तेमाल करने का एक मॉडल बनाया था। लकड़ी के छोटे टुकड़ों और तारों तथा गत्ते के ढक्कनों से बने टैंकों के अवरोध, कई तरह के हथियार और फौज ी टुकड़ियाँ, ये सब पट्टी पर पड़े थे और उन्हें युद्ध की विभिन्न स्थितियों के अनुरूप हिलाया जा सकता था। पीला, ऊर्जा से कँपकँपाता लेफ्टिनेंट बहुत खुश था। डेविड क्योनिष का चेहरा खिल रहा था। मैंने उसकी माँ को आसक्ति पूर्वक अपने पिता पर सवारी करते देखा था और मेरी इतनी ज ोर से हँसी छूटी कि सब मुड़कर पिछली पंक्ति की तरफ देखने लगे, जहाँ मैं बैठा हुआ था। इस प्रस्तुतिकरण में हँसने वाली ऐसी कौन सी बात है, लेफ्टिनेंट भौंका, जिस पर मुझे और भी ज ोर से हँसी आ गई, जिस पर उसने मुझे धमकाया कि वह मुझे बन्द करवा देगा। मार्च में जब मैं 6 महीनों बाद बैरक से बाहर निकला तो मुझे ऐसे महसूस हो रहा था कि जैसे मैंने कई साल वहाँ बिताए हों, अक्सर नशे में धुत्त, अधिकतर गुस्से से भरे हुए और हमेशा उकताहट महसूस करते हुए।

एक मामा की सिफ ारिश से मुझे विएना की एक डेरी में नौकरी मिल गई, और मैं अप्रैल से अगस्त तक एक ड्राइवर के साथ गाड़ी में बैठकर हर रात सुपर मार्कीटों, बेकरियों और किराना-दुकानदारों को दुग्ध-उत्पादों की सप्लाई किया करता था और 50 हज ार शिलिंग कमाता था।

फिर मैं कहीं दूर निकल जाना चाहता था। अमरीका, एशिया और आस्ट्रेलिया मेरे लिए बहुत दूर थे, अतः मैं 30 अगस्त को ओरिएंट एक्सप्रेस में बैठकर पेरिस की ओर निकल पड़ा, एक ऐसी मंजि ल जो मैंने बिना कुछ ज यादा सोचे ही खोज ली थी। सुबह के धुँधलके में जब मैं पेरिस के पूर्वी स्टेशन से बाहर निकला तो मुझे इतना अच्छा महसूस हो रहा था और लग रहा था कि हर वक्त कोई न कोई मुझसे बात करेगा, मुझे कॉफ ी पीने का, अपने साथ सैर करने का, रोमांच अनुभव करने का निमन्त्रण देगा। स्टेशन के सामने का चौक, जिसके साथ दोनों तरफ द्विफल के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों वाली एक सड़क आकर मिल रही थी, साथ ही जहाँ कैफ े भी बने हुए थे, अभी बुझाए गए बिजली के खम्भे, सब मेरा इन्तज ार कर रहे थे। मैंने पीछे मुड़कर स्टेशन के हॉल को देखा, अपने पीठ-झोले को कन्धे पर लटकाया और बिना किसी नक्शे के पेरिस में प्रवेश कर लिया, कभी-कभी खड़ा होकर मैं आँखें बन्द कर लेता था और गहरी साँसें लेता था। मेरे पिता ने कभी मुझसे पेरिस के बारे में बात

नहीं की थी। जब से मेरे चाचा जैक ने मुझसे बात की थी, तब से मेरे मन में हज ारों ऐसे प्रश्न थे, जो मैं उनसे पूछता। रयू सान्त देनी से मैं निकल रहा था, जहाँ दोपहर पहले ही लिपी-पुती औरतें मर्दों का इन्तजार कर रही थीं। मौसम गरम था। मैं छाया में कहीं एक बैंच पर बैठ गया। मेरा गला भर्रा रहा था। एक होटल में जाकर मैंने कमरे का किराया पूछा और कमरा देखा। कई जगहों पर मैंने यह प्रक्रिया दोहराई। कमरा ढूँढ़ना मुझे अच्छा लग रहा था। अन्त में मैंने ले आल के निकट एक होटल में कमरा लेने का फ ार्म भरा : टोबियास फ ाइटल। व्यवसाय : जोकर। रिसेप्शन पर खड़े आदमी ने न फ ार्म में और न ही मेरे दिखाए पासपोर्ट में कोई दिलचस्पी दिखाई।

कमरा साफ -सुथरा था। उसमें से तभी-तभी सफाई किए जाने की गन्ध थी। खिड़कियों की झिलमिली बन्द थीं, और वे अन्दर की तरफ खुलती थीं। मैं नहा-धोकर शीतल कमरे में बिस्तर पर नग्न लेट गया। पड़ा रहा और हमेशा वहीं वैसे ही पड़ा रहना चाहता था। वहाँ से कभी जाना नहीं चाहता था। जब मैं जगा तो बाहर संध्या के धुँधलके में बारिश की कलकल ध्वनि थी। झिलमिली उठाकर मैंने हाथ बाहर बारिश में निकाले। बादल गरज रहे थे। कपड़े पहनकर मैंने चाबी रिसेप्शन पर पकड़ाई और दरवाज े पर खड़ा होकर बाहर बरसात को देखने लगा। दरबान मेरे पास आकर खड़ा हो गया। और मुस्कराकर उसने मुझे एक छतरी देने की पेशकश की। मेर्सी[1]! बारिश के नीचे खुली छतरी के नीचे हर कदम चलने पर मज ा आ रहा था। मैंने शहर का एक नक्श ा खरीद लिया और शां एलीज े की तरफ निकल पड़ा। वहाँ मैं पूरी शाम मटरगश्ती करता रहा, जब तक कि उस चौराहे की परिधि के सिरों तक रात नहीं आ गई, जिसके बीचोबीच सर्चलाइटों की रोशनी में आर्क दे त्रिओफ जगमगा रहा था। जब मैं लौट रहा था तो बरसात थम चुकी थी। हवा ठंडी थी।

दूसरे, तीसरे और चौथे दिन तक मैं पेरिस में इतना घूम लिया, जितना मेरी टाँगें सहन कर सकती थीं। लाखों लोगों की तरह मैं मोनालीज ा के चित्र के सामने खड़ा सोच रहा था कि क्या मेरे पिता भी इस या उस नज र से रूबरू हुए थे। एक विशाल सिनेमाघर में मैंने जेम्स बांड की एक फिल्म देखी, और जब रोजर मूर ने कहा, ''मे आई इंट्रोड्यूस माईसेल्फ , माई नेम इज बॉन्ड, जेम्स बांड,'' तो दर्शकों ने करतल ध्वनि की और मैं खुश हुआ। फिर मैं नोत्र दाम चर्च के सामने बैठकर ऊपर की ओर तब तक दृष्टि डालता गया जब तक कि मेरी गर्दन में दर्द नहीं हो गया। पाँचवें दिन मुझे ज े ने नदी के तट पर, चर्च के ऊपर से नज र आती सिल्विया बाख़ द्वारा स्थापित की गई किताबों की दुकान शेक्सपियर कम्पनी मिली। पिता ने मुझे बताया था कि बीस के दशक में हेमिंग्वे, फि त्सजेराल्ड और जॉयस[2] यहाँ आते-जाते थे।

1. फ्रेंच में 'धन्यवाद'।
2. सुप्रसिद्ध अमरीकी साहित्यकार।



आस्ट्रियाई सम्राट फ्रांत्स-योज ेफ जैसे गलमुच्छों वाला एक अँग्रेज , जिसने चौखानेदार ट्वीड का कोट पहन रखा था, वहाँ अँग्रेज ी भाषा की पुस्तकें खरीद रहा था। उसने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ से था, और तब उसे हैरानी हुई कि इतनी कम उम्र का एक आस्ट्रियाई युवक इतनी समझ रखता है, जब उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उस जगह की अहमियत को समझता हूँ, जिस बारे में मैं पिता से पहले ही ज्ञान प्राप्त कर चुका था। दुकान में मिले इस आदमी का नाम था डेव, एक लंडनवाला, जो तीस सालों से पेरिस में रह रहा था। चूँकि मैं साहित्य की क द्र करना जानता था, अतः वह मुझे ऊपर वाली मंजि ल पर ले गया। एक सोफ ा, जिसका चिथड़े-चिथड़े हुआ चमड़े का आवरण बाहर निकलती भरत के रेशों को ढांक रहा था, हमारे सामने पड़ा था, उसकी बगल में ठसाठस भरे किताबों के रैकों के सामने एक मेज और दो कुर्सियाँ। बन्दे ने झुककर चमड़े को सहलाते हुए कहा कि बिलकुल यहाँ, इस फर्नीचर पर वे बैठते थे, पढ़ते, लिखते और सोते थे, युग के सबसे महान लेखक, तब वे ''ग रीब, मगर उत्साह से भरपूर थे, जगह महत्त्वहीन थी।'' बाद में मुझे प्रकाशनघर की संस्कारता ने बताया कि नोत्र दाम के निकट दुकान का यह कैफ े 1961 में खोला गया था, ऊपर वाली मंजि ल पर पड़ा फर्नीचर ख़ैर ऐसे लग रहा था मानो उसे पूरे पेरिस से आड़ा-तिरछा करके घसीटकर लाया गया हो।

तब, 1981 की ग्रीष्म में, हम किताबों की दुकान के बगल वाले कैफ े में बैठे आस्ट्रिया, हिटलर तथा फ्रेंच कट्टरवाद पर चर्चा कर रहे थे। बाद में तीन दिन भी मैं शेक्सपियर एंड कम्पनी आता रहा। यहाँ मुझे सब अच्छा लगता था। मैं वहाँ बैठे दुकान के लकड़ी से बने पुराभाग का अवलोकन करता था, हेमिंग्वे, फित्सजेराल्ड और जॉयस के बारे में सोचता था, और गोटिक शैली के चर्च की दीवारों पर बने गुलाबों को निहारता था, और जब समय बीत रहा होता था तो मैं वहाँ बैठे रहने के अलावा और कुछ नहीं करना चाहता था। तब तक, जब तक कि नोत्र दाम के सामने वाले चबूतरे पर सस्ते तथा अपने ही घर का पुराना सामान बेचने वालों द्वारा लगाए गए बाज ार में घूमते हुए विदेशी किताबों से भरी हुई एक पेटी मुझे नहीं मिल गई, जिसमें टटोलते हुए 80 जर्मन किताबों के नीचे पड़ी एक ऐसी किताब मुझे मिल गई, जिसने मेरी जि न्दगी ही बदल दी। पहली नज र में मैंने उसे नहीं पहचाना, हालाँकि इसके प्रकाशित होने के बाद इसकी प्रतियों की एक लम्बी कतार हमारी बैठक के बीचोबीच पड़े किताबों के रैक पर पड़ी थी।

इसके नीले-पीले आवरण को देखकर मैं ठिठक गया था। पुस्तक निकालकर मैंने उसे ग ौर से देखा और खड़ा हो गया।

खड़े होकर मैं शीर्षक पढ़ने लगा, *'भावनाओं की अराजक भूमि पर।' सम्पादिका :*

*नटाली क्योनिष* 'मैंने किताब खोली : योआख़िम फ  इटल।' उसकी नीचे प्रवाही लेख[1] में *जनवरी में ग्रीष्म का आगमन। तीन देश।*

बेचने वाले ने तीन अँगुलियाँ दिखाते हुए कहा कि यह पेटी उसे और चीज  ों के साथ आस्ट्रिया के एक रिश्तेदार से फ  नीचर के एक हिस्से के बदले में मिली थी। 20 फ्रैंक का एक नोट उसे पकड़ाकर मैं किताब ले गया। कहीं जाकर बैठ गया। कुछ देख नहीं रहा था, सुन नहीं रहा था, बल्कि पहली बार पेरिस में अपने पिता की कविताएँ पढ़ रहा था। दो घंटे मैं बार-बार ये ग्यारह छन्द पढ़ता रहा। 144 पंक्तियाँ, जो मुझे आनन्द दे रही थीं।

बाद में मैं इस किताब को लेकर शेक्सपियर एंड कम्पनी के साथ वाले कैफ  े में बैठा था। डेव भौचक्क था। वह इस संयोग से प्रभावित नहीं था, बल्कि इस बात से था कि मेरे पिता कवि थे। पिता के अन्त से भी वह, मेरे प्रति सहानुभूति रखते हुए, उतना ही प्रभावित था। उसने मुझसे कई प्रश्न पूछे और जब तेज  ी से आते-जाते लोगों को हम देख रहे थे तो मैं अपनी जानकारी से अधिक बातें उसे बताना चाहता था। एक-दो बार मेरे दिल में नटाली से मिलने का विचार उठा।

ज  ेने नदी के तट पर उस कैफ  े में बैठे, जहाँ से नोत्र दाम का चर्च नज  र आता है, जब मैंने वह निश्चय किया था, जो करने का मैं सोच भी नहीं सकता था, चार दिन बाद मैंने उस पर अमल किया  आस्ट्रिया में मैं उस दरवाजे  के सामने खड़ा था, जहाँ से गुज  र कर मेरे पिता अक  सर श्रीमती क्योनिष के शयन-कक्ष में जाया करते थे, और मैंने दरवाज  े की घंटी बजाई, यह जाने बिना कि मैं उससे बात क्या करूँगा।

अन्दर से मुझे पश्चिमी शास्त्रीय संगीत बजता सुनाई दे रहा था। घर के सामने एक मर्सीडिज कार खड़ी थी, जिसे कस्बों के डॉक्टर मरीज  ों को देखने जाने के लिए इस्तेमाल करते हैं। अचानक लकड़ी का भारी दरवाज  ा खुला और मेरे सामने सफ  ेद बालों वाला एक आदमी खड़ा था। उसके पीछे संगीत ज  ोर से बज रहा था।

''कहिए?'' उसके स्वर से लग रहा था कि उसे परेशानी हुई है। मैंने इसकी उम्मीद नहीं की थी, ख़ासतौर पर कार वहाँ खड़ी होने की वज  ह से। अगर मि. क्योनिष अपनी पत्नी के लफड़े के बारे में जानता होगा तो क्या होगा? और जब यहाँ खड़ा कोई आदमी परस्त्रीगामी के बेटे के रूप में अपना परिचय दे रहा है। मेरे मुँह से आवाज  नहीं निकली और इससे पहले कि वह धड़ाम से दरवाज  ा बन्द करता,

''हाँ?''

''मैं''

1. इटैलिक्स।



...हँसी आने वाली बात थी। इसी क्षण मुझे जैक द्वारा वर्णित उस पुरुष की याद आती थी, जिसके बाल सफ  ेद थे और सींग छत तक जा रहे थे, और अपनी पत्नी के शयन-कक्ष में खड़ा मेरे पिता को पर उसे सवारी करते देख रहा था।

''जवान, कल नौ बजे से मुझे मरीज  ों को देखना है, और आप न तो जख़्मी लग रहे हैं, न ज  यादा बीमार लग रहे हैं,'' हैंडल पर हाथ रखे-रखे डॉ. होर्स्ट क्योनिष ने मुझे कहा, तभी मैंने अपने पीछे एक कार के रुकने की आवाज  सुनकर पीछे मुड़कर देखा।

नटाली!

उतरकर वह जल्दी से आई और इसने उससे मेरा परिचय अपने एक सहयोगी के 'अत्यन्त प्रतिभाशाली' पुत्र के रूप में करवाया, और कहा कि मैं उसे मिलने आया था। मैंने उसके पति के मुँह पर व्यंग्यात्मक मुस्कान देखी। बाद में वह मुझे बताएगी कि वह अपने पति के चेहरे पर आए इस भाव से कितनी घृणा करती थी। और कि अक  सर वह उसे अपने बेहतर होने के घमंड को चेहरे पर लिए ज  मीन पर मुर्दा पड़े होने का तसव्वुर कुछ पल के लिए किया करती थी। इस कठोर आदमी ने अपनी पत्नी का मेरे तरफ  देखकर आँखें मिचमिचाने का खेल नहीं देखा था, जिससे उसने मुझे भी अपने पिता का सहअपराधी बना दिया था। चुपचाप जाकर उसने संगीत को दरवाज  े के पीछे बन्द कर दिया।

''ब्रुकनर''[1], वह बोली, ''हद है।''

सीधा मेरे चेहरे में देखते हुए उसने कहा, ''आपके पिता अक्सर आपकी असाधारण लेखन-प्रतिभा की बात किया करते थे।'' जैसे कि वह मजबूरी में बोल गए अपने झूठ को उचित ठहराना चाहती हो, मैंने सोचा, और असहमति में मैं नम्रतापूर्वक मुस्कराया और पिता के वक्तव्य के बारे में मैंने कहा, ''स्कूल में मैं निबन्ध लिखना पसन्द करता था, उन्हीं में उन्होंने मेरी प्रतिभा खोज ली होगी।''

उसने चुपचापन हामी में सिर हिलाया, जैसे मुझे समझ रही हो, और फिर कुछ देर बाद वह बोली, ''मैं काफ  ी समय के लिए बाहर गई हुई थी।''

फिर कुछ सोचकर वह बोली, ''कल मेरे लौट आने के बाद आपका यहाँ आना एक तरह से एक दैवयोग है। शायद मैं ही आपके पास आ जाती, चाहे...आप मेरा मतलब समझ रहे हैं।''

वह जानती थी कि मैं क्या जानता था।

हम उसके घर की सीढ़ी के पहले पायदान पर खड़े थे, और अन्ततः उसे पूछना याद आ गया, ''मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?''

1. आस्ट्रियाई संगीतकार (1824-1896), प्रतिभावान, परन्तु कुरूप।

''मैं आपसे अपने पिता के बारे में बात करना चाहूँगा।''

हाँ। ठीक है। ज रूर। कुछ सोचकर उसने कहा कि मैं इसे ग लत न समझूँ, लेकिन आज यह नहीं हो पाएगा। उसे और उसके पति को उसके दोस्तों ने निमन्त्रण दिया हुआ है, क्या कल मेरे पास समय है?

अगले दिन जब हम जि ले की राजधानी की नगर-प्राचीर से लगे कैफ े में एक-दूसरे के सामने बैठे थे तो उसने कहा, ''मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगी।''

''मैं भी आपसे नहीं।''

हममें से कोई कुछ नहीं बोला, वह कुछ सोचती लग रही थी।

फिर मैं बोला, ''ऐसी एक प्रेम-मृत्यु आम नहीं होती। आम तौर पर ठंडे पड़ चुके आदमी को कपड़े पहनाकर दिल का दौरा पड़ने की बात की जाती है। आपके सोने के कमरे को देखे बग ैर मैं तसव्वुर कर सकता हूँ कि मई के इस दिन वहाँ क्या हुआ था। लेकिन यह मेरी समझ के बाहर है कि आपने यह किया कैसे, इसका व्यावहारिक पहलू ही मेरे लिए पहेली बना हुआ है। मेरे पिता आपसे एक फुट लम्बे थे और कुछ ज्यादा भारी भी थे। किसी तरह से,'' वह बोली ''मुझे और काई विवरण मालूम नहीं है। मैं जैसे विचक्षण भाव-समाधि में थी, जानती थी कि कैसे सब सही करना है। डिकी उसके लिए बहुत छोटी थी। उसे चिपकाकर या तोड़-फोड़ कर भीतर घुसेड़ने की मैं कल्पना नहीं कर सकती थी। मैं गुसलखाने से अपना प्रसाधन वाला डिब्बा ले आई और लीप-पोत कर उसका चेहरा जीवन्त-सा बना दिया। फिर योआख़िम कार में बैठा था, जैसे आराम कर रहा हो, और क्योंकि अँधेरा हो रहा था तो मैं पहाड़ी पर उसे उसकी बैंच पर, उसकी मनपसन्द जगह पर बिठा आई।''

मैं खुला मुँह किए औरत को ताक रहा था।

उसने अपने पर्स से एक पैकेट निकाल कर उसमें से अपने लिए एक सिगरेट सुलगाई, एक गहरा सुट्टा लगाया और सड़क की तरफ देखते हुए फुसफुसाकर बोलने लगी, पर मैं नहीं जानती कि आपके पिता अपनी बैंच से इस पार्किंग में कैसे आ गए। और उनके मृत शरीर में यह गोली सबसे वीभत्स एक चीज है जिसे मैं ...और यह बहुत लम्बी, गन्दी वर्दी। मैंने इस बारे में अख़बारों में पढ़ा था। मेरे पास योआख़िम हमेशा आम पोशाक में आता था...और अभी तक मैं सब भूल नहीं पाई। इसके अलावा कुछ नहीं कर सकती कि इन यादों के धुँधले होने का इन्तज ार करूँ। लेकिन ये कभी नहीं जाएँगी।''

मैंने आज तक किसी से अपने पिता की मौत के बारे में इस तरह खुलकर बात नहीं की थी, और इस खुलेपन के लिए मैं नटाली क्योनिष का आज तक आभारी हूँ। इस औरत से बात करने तक मैं नहीं जानता था कि इसे, अपने पिता को और उनके अन्त को मैं क्या समझूँ। और अब यह मुझ पर स्पष्ट हो गया था। मैंने उससे



पूछा कि उसका उनसे परिचय कैसे हुआ था?

उसकी आँखें अचानक नम हो गईं।

उसने पूछा कि अगर वह मेरे पिता का प्रथम नाम ले तो मैं बुरा तो नहीं मानूँगा।

''लीजिए, लीजिए।''

उसने बताया कि जब योआख़िम ने उसे कविता की उस पत्रिका में अपनी कविताओं का प्रकाशन करने के लिए उसे वे कविताएँ भेजी थीं, जिन्हें वह बरसों जर्मन भाषी क्षेत्र से प्रकाशित होने वाली सभी साहित्यिक पत्रिकाओं को भेजता रहा था और जो किसी ने कभी नहीं छापी थीं, और उसने जब उनमें दिलचस्पी दिखाई थी तो उसे यक ीन नहीं आ रहा था। ''पिता-पुत्र सम्बन्धों की काव्यात्मक प्रस्तुति को देखकर वह मन्त्रमुग्ध थी, दर्शन की भाषा में ऐसा भावगीत विरले ही पढ़ने को मिलता है। ''मुझे महसूस हुआ था कि यह कवि एक ऐसा पुत्र होना पसन्द करेगा, जिस पर उसका पिता गर्व करे। कविताओं के साथ जो पत्र उसने भेजा था, उसमें उसने अपना परिचय कविताएँ लिखने वाले गाँव के एक पुलसिये के रूप में दिया था, जिससे मेरी उत्सुकता जाग उठी थी। मैंने फिर उसे एक काव्य पाठ में आमन्त्रित किया। अपने पहले सार्वजनिक पाठ में वह मेरे साहित्यिक दायरे के लगभग 20 सदस्यों के सामने पढ़ने वाले 5 लेखकों में से तीसरा था।''

जो उसने पढ़ा, नटाली उसे नहीं समझी। उसने मेरे सामने स्वीकार किया कि अपने पचपनवें जन्मदिन के कुछ दिन बाद तक वह उसके पाठ के किसी शब्द को नहीं समझी थी, क्योंकि वह इस चालीस वर्षीय पुरुष के स्वर की सिर्फ खनक ही सुनती थी या फिर उसके होंठों का हिलना देखती थी।

व्याख्यानों के बाद वह रात्रि के समय काँच की दीवार के साथ लगी एक मेज के पास योआख़िम के साथ खड़ी थी। उसने बताया कि उसका सौतेला पिता भी उस नगर में सशस्त्र पुलिस में था, जहाँ उसका जन्म हुआ था, रिटायर होने से पहले के अन्तिम वर्षों में वह थानेदार बन गया था, शायद वह भी इसी तरह अन्त में थानेदार बन जाएगा, लेकिन जीवन की इस राह में कुछ ख़ास मौलिक नहीं था।

''मुझे महसूस हुआ कि योआख़िम की कविताओं के केन्द्र में उसका सगा पिता था, जिसका उसने शब्दों में कहीं वर्णन नहीं किया। वह इस तथ्य से अप्रसन्न था कि एक कस्बे की पुलिस चौकी से आगे जीवन में कुछ नहीं कर सकता था। लेखन का अर्थ उसके पिता के लिए स्वाधीनता था। इससे उसे मुक्ति का एक अद्‌भुत एहसास होता था। मेरा निमन्त्रण उसकी पहली साहित्यिक सफलता थी। और इससे उसे आगे भी लिखने की प्रेरणा मिली थी।''

उस शाम उसने उससे वो बातें कीं, जो उसने अपनी पत्नी से कभी नहीं की थीं, सबके जाने के बाद भी वे काफी देर बातें करते रहे। मुझे देखते हुए वह बोली,

''आपके पिता आपके बारे में बहुत बात करते थे, आप पर सरस्वती का जितना हाथ है, उसका वह केवल सपना ले सकते थे। उसे आपसे बहुत उम्मीदें थीं।''

मेरा गला भर्रा आया, ''धन्यवाद।''

वहाँ बैठे मुझे समझ नहीं आ रहा था कि में क्या बोलूँ।

फिर उसने बोलना शुरू कर दिया।

बाद में मुझे समझ आया कि अपने सदमे से बाहर निकलने के लिए ज रूरी था कि वह किसी से बात करे। और मैं, योआख़िम का बेटा, इसके लिए एक आदर्श श्रोता था, जिसे उसने सुनाया कि दो साल पहले जब वह सर्दियों की एक सुबह धुँधलके में पिता के साथ अपने कमरे में बैठी थी तो सब कैसे शुरू हुआ। वह एक ऐसी कविता की खोज में था जिसे वह चर्च में अपने एक मित्र के विवाह समारोह पर पढ़ना चाहता था। नटाली को यह ख़्याल पसन्द आया।

वह बिस्तर पर बैठी थी और उसने ऐसे ही अपने पास पड़ी एरिष फ्रीड की एक पुस्तक को उठा लिया। पन्ने पलटकर उसने कहीं से पढ़ना शुरू किया। वह ध्यान से सुनता रहा, फिर उसने पुस्तक उसकी ओर बढ़ाई। पुस्तक लेकर उसने पन्ने पलटे और पढ़ने की कोशिश करने लगा। कमरे में बहुत अँधेरा था। उसने पुस्तक नटाली को वापिस कर दी, जिसे पढ़ने की ज रूरत नहीं थी, क्योंकि अधिकतर कविता उसे पूरी तरह याद थीं।

मेरे पिता ने एक प्रणय कविता की तीन पंक्तियाँ कहीं : नहीं थी तुझमें कोई त्रुटि, थी तो मुझमें थी। मैंने प्यार किया था। उनका कहना था कि यह फ्रीड की कविता थी। ब्रेष्ट, नटाली ने उसे सही किया। दोनों ब्रेष्ट के घोर प्रशंसक थे। चार वर्ष बाद, जि ले की राजधानी की नगर-प्राचीर वाले कैफ े में इस दिन श्रीमती क्योनिष ने अचानक अपना रूमाल निकालकर नाक सुड़की।

मुझे एक सूझ लगी और मैंने अपनी जैकेट की जेब से पेरिस वाली किताब निकाली। उसे मैंने उसके सामने मेज पर रख दिया। जब नटाली ने उसे देखा तो वह सिर्फ बोली, ''ओह!'', जिससे मुझे निराशा हुई, जैसे कि वह कुछ और भी तो कर सकती थी। उसे उठाकर फिर मैंने उसके सामने ऊँचा कर के दिखाया और कहा, ''पेरिस से सलाम'' और उसे बताया कि किताब मुझे कहाँ से मिली।

मुझे देखते हुए, आँखों में आँसू लिए, वह मुस्कराई। फिर वह खड़ी हो गई, मैं तेज ी से उसके पीछे जाने लगा। हम एक-दूसरे के सामने खड़े थे, वह बाँहें उठाए, उन्हें तनिक फैलाए खड़ी थी, जैसे मुझे आशीर्वाद देने वाली हो। परन्तु वह आगे झुकी, और मेरा आलिंगन करके उसने मुझे सटा लिया और जीवन में दूसरी बार मुझे एहसास हुआ कि इस औरत की सुगन्ध कितनी प्यारी है।

*उपन्यास 'फ इटल्स त्राउम' से एक अंश*



❑ **धारावाहिक उपन्यास**

# प्रस्तरवृष्टि

**फ्रांत्स होलर** **अनुवाद : अमृत मेहता**

रसोई की मेज पर कातारीना सबसे अन्त में बैठी थी, या सबसे पहले अपनी बाज ू की बगल में, और सुन रही थी कि फ ेट्टर कैसे झगड़ रहे थे।

वे उसके सामने बैठे थे, पाउल उनमें सबसे बड़ा था; लेकिन कद में सबसे छोटा, बल्कि अपनी पत्नी से भी कुछ छोटा था, कातारीना को यह ख़्याल तब आया था, जब दोनों एक साथ रसोई के दरवाज े से अन्दर आए थे। उसके बाल घुँघराले और आँखें चालाक थीं। जल्दी-जल्दी बोलता था और कातारीना उस पर पूरी तरह विश्वास नहीं रखती थी, जैसे उन सभी पर, जिन्हें मज ाक करने का शौक होता है। जो भी कोई मज ाक करता था यह नहीं बताता था कि उसका मतलब क्या है, और कातारीना को यही डर था कि वह जो कह रहा है वही उसका मतलब होगा। उसे कैसे तुरन्त पता चल सकता है कि एक लुहार उसकी एड़ी पर नाल ठोंकना चाहता है या नहीं या कि फ ेट्टर शायद उस पर कुत्ता छोड़ देगा?

उसके विपरीत योहान्नेस लम्बा था, विवेकशील और सीधा-सादा था। वह पाउल से धीरे बोलता था, उसके बारे में निश्चित होता था कि वह जो कह रहा है वही उसका मतलब है। उसके बाल भी घुँघराले थे, लेकिन चेहरा ज यादा चौड़ा था, नाक बड़ी थी और उसके होंठ हमेशा ज रा खुले रहते थे, चाहे वह कुछ बोल न रहा हो।

तीनों में फ्रीडोलिन अकेला ऐसा था, जिसकी मूँछें थीं। कमाल था कि उसके बाल भी घुँघराले थे, जबकि दादी के बाल एकदम सीधे थे, वह कंघी से उन्हें पीछे खींचकर रखती थी और वहाँ एक चोटी बाँध लेती थी, जो एक कुंडली मारे साँप की तरह पीछे लगी होती थी। कातारीना को दादी की उम्र नहीं पता थी, लेकिन उसे यह पता था कि उसके ढेर सारे बेटी-बेटे थे, उसके माता-पिता से बहुत अधिक, और वास्तव में ऐसी औरत के बाल कब से सफ ेद हो जाने चाहिए थे, 'मोएर' के साथ वाले घर में रहने वाली बूढ़ी एल्ज बेथ की तरह, पर दादी की साँप सरीखी चोटी ब्राउन और मज बूत थी, और उसकी त्वचा पर हालाँकि कुछ झुर्रियाँ थीं, मगर उसका रंग नाशपाती की किसी ताज ी डबलरोटी जैसा था।

फ्रीडोलिन बोलते समय हमेशा तनिक ऊपर देख रहा होता था, मानो पहाड़ों को

देख रहा है। अभी-अभी उसने बताया था कि कैसे उसे आज दिहाड़ी पर काम मिल गया था, हालाँकि स्लेटी-कारखाना, जिसमें वह काम करता था, चट्टानें गिरने के ख़तरे की सम्भावना के कारण कल बन्द कर दिया गया था। उसने 'त्सुम मार्टिंस्लोख़' रेस्तराँ के लोगों की, जो प्लाट्टेनबेर्ग की ढलान के एकदम नीचे पड़ता है, उसका सामान वाहन में रखवाने में मदद की थी, ताकि वे अपने रिश्तेदारों के साथ रहने माट्ट जा सकें। वहाँ उन्होंने ख़तरा निकल जाने के समय तक अपनी पेटियाँ, चारपाइयाँ, बिस्तरे, मेज-कुर्सियाँ सब भुसौरों में रख दी थीं, ऐसा बताया फ्रीडोलिन ने।

उनका दिमाग ख़राब हो गया है, पाउल का कहना था, बुरा वक त निकल चुका है, और दो चार पत्थर गिरने की वजह से कोई रेस्तराँ बन्द नहीं कर देता, अब सभी जो पीना चाहते हैं, 'मोएर' में जाते हैं, उससे तेरे पिता को फ ायदा होता है, नहीं क्या, दीदी, वो कोई डरपोक ख़रगोश नहीं है और जब पहाड़ ऊपर से गड़गड़ाते हुए हिलता है, धड़-धड़ करता तो वह माट्ट को नहीं भाग जाता।

कातारीना ने सिफ ं सिर हिलाया। फिर से वही शब्द सामने आ गया है, जो उसे पसन्द नहीं है। जब कोई नहीं चाहता कि पत्थर उसे आकर लगे तो वह क्या डरपोक ख़रगोश हो जाता है? अगर कोई डरपोक ख़रगोश नहीं होना चाहता तो क्या होगा वह? हिम्मतवाला खरगोश? कातारीना के दिमाग में ऐसे आदमी के लिए कोई शब्द नहीं आ रहा था, जो किसी ऐसी दीवार या पहाड़ के नीचे जाकर खड़ा हो जाता हो, जहाँ ऊपर से पत्थर गिर रहे हों।

अब फ्रीडोलिन ने अपने भाई का प्रतिवाद किया, सच्चाई एकदम विपरीत है, और रेस्तराँ वालों का दिमाग ख़राब तब होता अगर वो न जाते, क्योंकि परसों ही गेल्ब का ऊपरवाला हिस्सा नीचे गिरा है और र्‌यूरी का घास का मैदान उससे पूरा ढक गया है, और कि नगरपालिका का स्थानीय सभासद तक अपना घर छोड़कर ऊपर चला गया है, और कल पाँच बजे एक ऐसा धड़ाका हुआ था जैसे जनरल सुवोरोव ने अपनी सबसे बड़ी तोप फ्रांसीसियों पर दाग ी हो, और वो जो पहाड़ के नीचे लुढ़का है, उसने स्लेटी के गोदाम का सत्यानाश कर दिया है, किस्मत अच्छी थी कि किसी आदमी पर नहीं लुढ़का, और 'मार्टिंसलोख' का जहाँ तक सवाल है, वहाँ एक चट्टान सीधे घर के पीछे गिरी है, जिससे खिड़कियों के काँच टूटकर उड़ गए थे और मृगशृंग दीवारों से नीचे गिर पड़े थे, और अगली चट्टान बिना पूछे हमारी छत पर आ गिरेगी, उसके लिए ऊपर बहुत सामान है।

अब योहान्नेस ने उसकी ओर रुख किया और पूछा कि अगर मामला इतना खतरनाक है तो वह अभी भी स्लेटी-कारखाने में काम क्यों कर रहा है?

तो और क्या करे, फ्रीडोलिन ने पूछा और अपनी और अपने भाई की परछाईं



पर दृष्टि डाली, जो दिन की रोशनी मेज पर पड़ने की वजह से दीवार पर एक पर्वत शृंखला जैसी पड़ रही थी। "दिन के साढ़े चार फ्रेंक" उसने कहा, "और कहाँ मिलेंगे मुझे? तेरी बढ़ई की दुकान में?"

इस समय, पाउल ने कहा, साफ है कि दिन में वह कुछ नहीं कमा सकेगा, अगर प्रशासन स्लेट टूटना बन्द करने का कोई हल नहीं निकालता।

प्रशासन वाले जानते हैं कि उन्हें क्या करना है, फ्रीडोलिन ने कहा, और कल एक आयोग ढलान पर जाएगा यह देखने कि क्या गड़बड़ है।

और कौन होगा इस आयोग में, पाउल ने मज ाक उड़ाते हुए कहा।

उसने सुना है, फ्रीडोलिन ने कहा, कि पर्वत-पथप्रदर्शक एल्मन साथ जाएगा।

"पीटर?" योहान्नेस ने हैरान होकर पूछा।

नहीं, हाइरी और नगरपालिका का एक सदस्य, और फिर प्रान्तीय सरकार से भी कोई ज रूर होगा।

"अच्छा, अच्छा, प्रान्तीय सरकार से", पाउल ने कहा, "और कौन होगा वो?"

फ्रीडोलिन यह नहीं जानता था, और कुछ देर वे चुपचाप अपने प्यालों, पनीर की पपड़ी वाली प्लेटों और डोंगो को देखते रहे, जिनमें अभी आलू थे।

"वनपाल ज ेली", कातारीना ने कहा।

सभी सिर उसकी ओर घूम गए, दीवार पर बनी पर्वत-शृंखला डगमगाने लगी, पहाड़ एक तरफ झुक गए, जैसे अगले क्षण गिर पड़ेंगे।

"तुझे कहाँ से पता लग जाता है?" दादी ने कहा।

यह नाम आज दोपहर उनके पड़ोसी सिगनलमैन ने रेस्तराँ में उसके पिता को बताया था, और कातारीना तब तक हँसती रही थी, जब तक उसके पिता ने उसे टोका नहीं था, क्योंकि वह सोच नहीं सकती थी कि किसी का यह नाम[1] भी हो सकता है, और वह भी किसी वनपाल का, वह एक छोटी-सी झील की कल्पना कर रही थी, जो वन में से निकलकर वृक्षों के बीच निपट जाती है।

फिर से उसे हँसी आ गई और उसने घूमे हुए सिरों को बताया कि नाम का पता उसे कहाँ से चला था।

"देखो देखो दादी को" पाउल ने कहा और सिर हिलाया और फिर उसने अपने सबसे छोटे भाई को कहा कि अगर ज ेली और उसके साथियों को लगता है कि स्लेट-कारखाना बन्द करना पड़ेगा तो वह भूसा काटने में उसकी मदद कर सकता है।

क्या देगा वो, तुरन्त फ्रीडोलिन ने जवाब दिया। एक-चौथाई, पाउल ने कहा।

---

1. "जे " का अर्थ जर्मन में झील होता है।

सफ ेद या लाल शराब का? गम्भीरता से बात नहीं कर रहा वह पौवा नहीं, स्लेट के काम की एक-चौथाई पगार, इससे ज यादा वह दे नहीं सकता, पर उसका परिवार है और वह यहाँ रहता है तब वह माँ को खाने का पैसा दे सकेगा लेकिन उसके पास कुछ नहीं बचेगा, और इस तरह वह इधर से उधर डोलता रहा, जब तक योहान्नेस ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर नहीं कहा कि वह उसके पास बढ़ई की दुकान में आ सकता है, उन्हें एक मातहत मज दूर की ज रूरत है, और उसका ख़्याल है कि उसे वहाँ स्लेटी-कारखाने से आधी पगार मिल जाएगी, किसी भी हाल में कम से कम दो फ्रैंक।

कातारीनी को शक हुआ कि यह पूरा आधा नहीं था, 2 पेन 4 राप्पन[1] में मिलते हैं तो एक पेन कितने में आएगा, गणित इस तरह से लगता है, और साढ़े चार में आधे को भी दो से भाग करना होगा, लेकिन वह करना अभी उसे नहीं आता था।

क्या वे त्सेंटनर के घर नई तख़्ताबन्दी करेंगे या फिर क्या बात थी कि उसके पास आदमी कम पड़ गए हैं, पाउल ने पूछा।

नहीं, योहान्नेस ने जवाब दिया, बात कुछ और है।

''क्या है?'' फ्रीडोलिन ने पूछा।

''ताबूतों का गोदाम'', योहान्नेस ने कहा, ''मालिक ने पता किया है कि उनके पास ताबूत तक रीबन बचे ही नहीं हैं, और उनके पास हमेशा हर साइज के दो-चार ताबूत गोदाम में रहने चाहिए, कुछ पता नहीं होता कि अगले की ज रूरत कब पड़ जाए। गत सप्ताह उन्हें एक साथ बच्चों के दो ताबूतों की ज रूरत पड़ गई थी, जब एल्मर लुइज े के दो नवजात जुड़वाँ बच्चे थोड़ी-थोड़ी देर में मर गए थे और अब बच्चों के ताबूत बचे ही नहीं हैं, मोटी बोरियों और बल्लियों की तो बात ही छोड़ो।'' उसने बोझिल हँसी के साथ जोड़ा।

बाज े की हँसी तुरन्त निकली, फ्रीडोलिन अनुपस्थित-सा मुस्कराया, दादी ने असम्मति से सर हिलाया और बाजे बोली, ''तू भी योहान्नेस!''

कातारीना को हँसी नहीं आई। 'बच्चों के ताबूत' सुनकर वह सिहर गई थी। उसे अपने सामने आफ्रा बेबलर की क ब्र फिर से नज र आयी और फिर उसने सोचा कि एक दूध पीते बच्चे के ताबूत की ऊँचाई ज यादा से ज यादा एक बच्चे के ताबूत से आधी होती है। बढ़ई बच्चे के एक ताबूत के लिए पाँच फुट लम्बाई का फट्टा ख़रीदता है। दूध पीते बच्चे के लिए वह आधा काटता है। दूध पीते बच्चे का ताबूत कितना लम्बा होगा? फुटों और इंचों को अब वह नापने की नई प्रणाली में बदले। और अकस्मात् वह फिर से अपने कमरे में अपनी भारी साँसें लेती माँ के पास थी।

---

1. स्विट्ज रलैंड में मुद्रा की छोटी इकाई।



क्या होगा अगर छोटा मर गया तो, जन्म लेने के तुरन्त बाद? तब क्या योहान्नेस उसके लिए एक छोटा ताबूत काटेगा? फ्रीडोलिन उसका मातहत होगा? उसने निश्चय किया कि रात तो प्रार्थना के समय वह यह प्रार्थना करेगी कि बच्चा सही-सलामत दुनिया में आ जाए, ताकि किसी हालत में उसे ताबूत की ज रूरत न पड़े, और वह तगड़ा बने, और जब उससे अगला दुनिया में आए तो कास्पार के साथ वह ऊपर 'ब्लाइगन' में आ सके।

नेरो के भौंकने की आवाज आई, ज ंजीर खड़खड़ाई, एक आदमी की आवाज उसे चुप करा रही थी, जिस पर वह ख़ामोश हो गया। दरवाज े पर खट-खट हुई, बाहर वाले कमरे का दरवाज ा खुला, और आवाज ने कहा, ''मैं हूँ।''

''अन्दर आ जा।'' दादी ने आवाज लगाई, बिना खड़े हुए। वह जानती लगती थी कि यहाँ 'मैं' कौन कहता है?

रसोई का दरवाज ा खुला, और एक युवक वहाँ खड़ा था, जिसने पूरे दरवाज े को भर दिया था और जिसकी दैत्याकार छाया छत तक जा रही थी। अब कातारीना भी उसे पहचान गई। यह हंस-कास्पार था, जो उसकी बहन को रात के समय घर के पीछे चूम रहा था। वह 'ब्लाइगन' में पड़ोस के घर में रहता था।

'बैठ', दादी ने कहा, और वह और मार्ग्रेट, जो एक-दूसरे के पास बैठे हुए थे, कातारीना की ओर सरक गए।

हंस-कास्पार दादी के पास बैठ गया और दादी ने उसे चाय का एक प्याला बनाकर दिया। ''किसी और को कुछ चाहिए?'' उसने पूछा, और कातारीना ने अपना प्याला मेज के बीच खिसका दिया और वह एक बार फिर भर दिया गया। घर पर बच्चों को सिफ ् एक प्याला चाय मिलती थी। दादी ने बाज े का प्याला भी उठाकर दिया। ''पी, मार्ग्रेट'' कहकर उसे दे दिया, ''ताकि बच्चे के पीने के लिए कुछ हो।''

पाउल खड़ा होकर चूल्हे के पास पड़ी छोटी अलमारी के पास गया और उसमें से एक बोतल और कुछ छोटे गिलास निकालकर ले आया, सब कुछ मेज पर रख कर उसने चारों गिलास भर दिए। तीखी गन्ध की वजह से कातारीना के नथुनों में खुजली होने लगी, एक ऐसी गन्ध, जो उसे उतनी ही पसन्द थी, जितनी नापसन्द थी, क्योंकि आदमी लोग इसे बहुत ज यादा पी लेते थे और फिर ज ोर-ज ोर से बोलते थे और ऊधम मचाते थे।

चारों आदमियों ने अपने-अपने गिलास उठाए और एक-एक घूँट लिया।

फिर दादी ने आगन्तुक से प्रश्न किया, ''क्या ख़बर है?''

उसने बताया कि वह अभी-अभी 'मोएर' से आया है, वहाँ वाले सब सलाम कह रहे हैं, और दाई कात्रीन के यहाँ पहुँच चुकी है और रात वहीं रहेगी, उसका कहना है कि बच्चा कभी भी हो सकता है।

''अच्छा है कि वह वहाँ है'', दादी ने कहा, ''नहीं क्या मार्ग्रेट?''

मार्गेट ने सिर हिलाकर हामी भरी। उसके पास दाई देर से पहुँची थी, छः महीने पहले, क्योंकि सब इतनी तेज ी से हो गया था, और जब तक वह 'ब्लाइगन' पर पहुँची, छोटी अन्ना आ चुकी थी, और दादी ने उसकी मदद की थी, दबाने में, बाहर खींचने में और नाभिनाल, लहू और ग रम पानी से, जैसे सारी उम्र यही करती रही हो।

''आज रात हम उसके लिए प्रार्थना करेंगे।'' दादी ने कहा और आदेशपूर्ण दृष्टि से चारों ओर देखा। एक पल कोई कुछ नहीं बोला। कातारीना घबरा गई, क्योंकि उसे ख़्याल आया कि उसने सिफ र्् बच्चे के लिए प्रार्थना करने की सोची थी, लेकिन स्वभावतः माँ का महत्त्व भी उतना ही था, बल्कि ज यादा था, अगर बच्चे की बजाय माँ को कुछ हो जाता तो वह ज यादा बुरा होता, लेकिन यह उसे पता नहीं था।

''और अन्ना ने सिर्फ तुझे सलाम बोला है?'' पाउल ने पूछा, जिस पर सभी अर्थपूर्ण हँसी हँसने लगे। कातारीना को लगा कि हंस-कास्पार शर्म से लाल हो गया है। मगर उसने सवाल का जवाब नहीं दिया, सिफ र्् यह कहा कि बाद में वह एल्मर रेस्तराँ में था और कल एक आयोग प्लाट्टेनबेर्ग पर जा रहा है और कि क्या कोई जानता है कि उसमें कौन-कौन है।

''वनपाल ज ेली'', सभी के मुँह से एक साथ निकला।

हंस-कास्पार हैरान रह गया। उन्हें कहाँ से पता चला, उसने पूछा।

पाउल ने सर से कातारीना की ओर इंगित किया, ''हमारी बड़ी-बूढ़ी से।''

फिर से कमरा कई लोगों की हँसी से भर गया, और दीवार की पर्वत-शृंखला काँपने लगी। आखिर एक ऐसा मज ाक, जिसे कातारीना तुरन्त समझ गई। वह मेज पर सबसे बड़ी तो नहीं थी, बल्कि सबसे छोटी थी। सुन सकने योग्य स्वर में वह खिलखिलाई, और आदमियों ने एक-एक घूँट और पीया।

उसके अलावा और कौन है? पाउलर ने कुछ हद तक निराश पड़ोसी से पूछा।

हाइरी एल्मर, पर्वत-पथप्रदर्शक, ज ामुएल फ्राइटाक, नगरपालिका सदस्य और हलक े का वनपाल मार्टी।

क्या, पाउल बोला, मार्टी, वह तो माट्ट से है, और एल्मर को किसी माट्ट वाले द्वारा बताए जाने की ज रूरत नहीं है कि क्या करना चाहिए।

''ये वनपाल'', फ्रीडोलिन बुदबुदाया, ''चट्टानों के बारे में ये कुछ जानते भी हैं?'' पेड़ तो ख़ैर वहाँ बहुत सारे हैं, योहान्नेस ने कहा, वहाँ आड़े-तिरछे खड़े हैं, यहीं से नज र आ रहे हैं, और अगर कोई उन्हें ले आता है तो पूरे गाँव के लिए ताबूत बन जाएँगे।

''अब बन्द कर अपने ये ताबूत-बाबूत'', दादी ने कहा, ''अब कोई अच्छी बात



करो।''

''तो फिर वनपाल की बात करें'', पाउल ने सुझाया, और फिर हंस-कास्पार से बोला, ''वो आ गया है क्या?''

''हाँ'' उसने कहा, ''एक घंटा पहले आया है और रेस्तराँ एल्मर पर उतरा है।''

अब, फ्रीडोलिन बोला, ''तो मामला गम्भीर है, इसका मतलब यह हुआ कि स्लेटी कारखाने में कल भी काम नहीं होगा, क्या कहते हो?''

''हाँ'', हंस-कास्पार ने तसदीक की, और वही वह उससे कहना चाहता था।

''तो फिर मैं आता हूँ'', फ्रीडोलिन ने याकोब से कहकर अपनी मूँछ खुजलाई।

''तब मैं तेरे पास और तेरे ताबूतों के पास आता हूँ।''

# हॉलीवुड

**माग्दा वोइत्सुक** **अनुवाद : अमृत मेहता**

घर से निकलते हुए सिमोन ने कमीज का कालर ऊपर चढ़ा लिया। ज रा सी ठंड हो गई थी। अपने पीछे उसने दरवाज ा बन्द किया। बिल्ली ने विरोध में म्याऊँ-म्याऊँ की, सिर दरवाज े में डाल लिया। वह उसकी तरफ बढ़ा तो वह अन्दर जाकर ग ायब हो गई, दरवाज ा ताले में लग गया। सिमोन ने दो बार उसमें चाबी लगाई। बिल्ली उसकी पिछली प्रेमिका छोड़ गई थी। तीन सप्ताह पहले जब वह घर लौटा तो सभी सन्दूकों का सामान उसने फ र्श पर बिखरा पाया। चोरी होने का अन्देशा उसका तब खत्म हुआ जब उसने गुसलख़ाने में उन रैकों को खाली पाया, जिन पर ट्रेसी ने उस घर में आने के बाद कब्ज ा कर लिया था। उसे जि न्दगी में पहली बार नहीं त्यागा गया था, लेकिन इस बार उसे कुछ अलग सा लग रहा था। इसका सारा दोष वह बिल्ली को दे रहा था।

सिमोन गहरी नीली साब कार में चढ़ा, उसे स्टार्ट किया, तापनयन्त्र चलाया उसने और गाड़ी चलाने से पहले उसने हाथ रगड़े।

यहाँ सड़कें कभी खाली नहीं होती थीं, लेकिन अपनी चौड़ाई के कारण खाली प्रतीत होती थीं। इस चीज की समझ लॉस एजेंलेंस में सिमोन को बाद में आई थी। यह शहर हमेशा कुछ बड़ा दिखता था। वास्तव में यह हर दूसरे शहर जैसा ही था, बस ज रा सा उदास था और टूटे सपने स्वयं में समेटे था।

पार्किंग स्थल खाली था, सिर्फ एक वोल्वो कार वहाँ खड़ी थी। उसका एक पिचका हुआ बम्पर बार था और उसकी मोटर चालू थी। उसमें सुनहरे बालों वाली एक औरत बैठी थी। जब वह कार से उतरकर दरवाज े की तरफ गया तो उसकी दृष्टि सिमोन पर टिकी थी। पतलून की जेब से टटोलकर उसने चाबी निकाली। सिमोन ने आख़िरी बार औरत की तरफ देखा, परन्तु वह अपनी कलाई पर बँधी घड़ी को देख रही थी।

ताले में चाबी की आवाज सुनकर जिम्मी ने सिर उठाया।

कम्प्यूटर के पर्दे पर चमकते डिजिटल अक्षरों में समय दिखाई दे रहा था। 23.52।



"तू जल्दी आ गया है," सिमोन की ओर देखे बिना जिम्मी बोला। वह पांडुलिपि उसने बन्द कर दी, जो वह पढ़ रहा था। की-बोर्ड के ऊपर और इर्द-गिर्द कार्ड-सूचिका वाले गुलाबी कार्ड बिखरे पड़े थे, जिन्हें अब वह एकत्र करने लगा।

"जिसके साथ कार में तूने यात्रा करनी है, वह भी जल्दी आ गई है," सिमोन ने जवाब दिया और अपना बैग दरवाज े के पास रख दिया। उसकी घूमने वाली कुर्सी पर बैठ गया। "कैसा है?"

"अच्छा हूँ," जिम्मी ने जवाब दिया। "इस बार कुछ बन जाएगा।"

जिम्मी यहाँ पर यह भी सीखा था, लॉस ऐंजलेस इस-बार-कुछ-बन-जाएगा वाला शहर था। जिन डेढ़ सालों में जिम्मी यहाँ काम कर रहा था, वह अनगिनत बार फिल्मों में भूमिका पाने के लिए साक्षात्कार कर चुका था। एक बार उसने एक फुटबाल-फिल्म में पानी पिलाने वाले का काम किया था, वह फिल्म थिएटरों तक कभी पहुँची ही नहीं थी, एक और बार फिल्म से उसकी भूमिका ही निकाल दी गई थी।

"किस चीज की तैयारी कर रहा है?"

"'बोर्न आइडेंटिटी पार्ट 4'। रोल बड़ा नहीं है, लेकिन अहम है," जिम्मी ने जवाब दिया। उसने ऊपर देखा। "मैं यहाँ पर बैठा सदा के लिए संकेत की प्रतीक्षा नहीं करना चाहता।" फिर वह हँसने लगा, जैसे उसे कुछ बुरा लग रहा हो। "माफ करना, सिमोन। तू जानता है कि मेरा क्या मतलब है?"

सिमोन जानता था कि जिम्मी का क्या मतलब था, बारह साल पहले, जब उसने यहाँ शुरुआत की थी तो उसका भी यही मतलब होता था। जिम्मी उठकर खड़ा हो गया।

"छोकरी माल है, क्या कहता है?", वह बोला। थोड़ी देर के लिए सिमोन को समझ नहीं आया कि युवा अभिनेता किसकी बात कह रहा था, फिर उसे पार्किंग स्थल वाली सुनहरे बालों वाली लड़की का ख़्याल आया। जिम्मी ने पीठझोला कन्धे पर डाल लिया।

"उसे ज यादा इन्तज ार नहीं करवाना चाहता, ठीक है?"

"भाग भाग," मुस्कराकर सिमोन निगरानी के पर्दों की तरफ मुड़ गया जिम्मी कमरे से बाहर हो गया और कुछ देर में सिमोन ने एक कार का दरवाज ा बन्द होने की हल्की-सी आवाज सुनी। कुछ मिनटों बाद पार्किंग-स्थल से उसके जाने की। पीछे पीठ टिकाकर वह स्क्रीनों पर देखने लगा। सफ ेद, तगड़े वर्ण, मानो पहाड़ों से उठते दरख़्त। होम-पेज नया बनाया गया था, बढ़िया लग रहा था। उसने कुछ बटन दबाये, पर्दों पर तस्वीर प्रकट हुई। पीछे से सामने आते अक्षर। उनके पीछे जो प्रकाश का गलीचा बिछा था, वह लॉस एंजलेस था।

सिमोन लड़कियों को भाता था, कम से कम उसे तो यही लगता था। ख़ास तौर से जबसे उसने रोडियो[1] में हिस्सा लेना शुरू किया था। तगड़ा बदन था उसका, लम्बा-ऊँचा था, चौड़े कन्धों वाला, हाथ बड़े-बड़े। नाक एक बार घोड़े ये गिर जाने के बाद कुछ टेढ़ी हो गई थी, लेकिन इससे उसका चेहरा गुस्ताख़ लगता था और वह और भी आकर्षक लगता था। बाइस की उम्र में वह कैलिफ ोर्निया आया था, परिवार के आपत्ति करने पर भी, विशेषकर पिता द्वारा। पिता ने मान रखा था कि एक दिन खेत को सिमोन सँभालेगा। वह एक सख़्त, हठी और मूर्ख आदमी थे। उनके हाथ भी वैसे ही चलते थे जैसे उनकी ज बान, ''अपने चूतड़ ढूँढ़ने के लिए तो तुझे टॉर्च की जरूरत पड़ती है,'' उन्होंने कहा था, ''तेरे जैसा फि ल्मों में क्या करेगा?'' पिता के अलावा वह घर छोड़ने के और भी कारण बताता था। सिमोन उस उजाड़ में जानवरों, इंसानों और वहाँ काम करने से तंग आ चुका था, वह इलाक ा पूरा मौसमों पर निर्भर था। बाद में जब सोचता था तो उसे ये कारण फ ज ूल लगते थे। उसे ज या चाहिए था, हालाँकि वह नहीं जानता था कि यह ज या क्या था? उसे यह बाद में पता चला था, मेलिबू में एक अजनबी के यहाँ एक पार्टी में वह छत पर टुन्न हुआ एक लम्बी कुर्सी पर लेटा था, उसकी गोद में एक आधी बेहोश लड़की थी, और जब वह अपना उसकी में घुसाने की कोशिश कर रहा था तो उसे कुछ पता ही नहीं था तब फिर उसे घोड़ों की याद आई थी। उस एहसास की, जब वह इन शक्तिशाली जीवों को ज मीन सुँघा देता था और तोड़ देता था। यह एक न्यायसंगत युद्ध होता था, जो जि न्दगी के बहुत नज दीक था। प्लास्टिक की इस दुनिया से बहुत ज यादा नज दीक, जिसमें वह उस दिन छत पर अचानक नहीं जानता था कि उसमें उसे इतना क्या आकर्षक नज र आया है।

जब सच उस पर स्पष्ट हुआ तो उसने जुगुप्सापूर्वक लड़की को परे धकेल दिया था। वह एक तरफ लुढ़क गई थी और उसका सिर नीचे जा टकराया था। आख़िर जब वह पैंट की जि प लगा चुका था तो उसे लहू नज र आया था। उसके सिर के पास एक टाईलों की दरारों के बीच इकट्ठा हो गया था। हालाँकि लड़की हिली थी और उसने बोलने की कोशिश की थी, लेकिन तब तक वह वहाँ से चल पड़ा था।

न जाने किस वजह से सिमोन और लड़कियों में कभी पटती नहीं थी।

सिमोन ने कुर्सी घुमाकर अपना बैग उठाया, उसे गोद में रखा और कुर्सी को लुढ़का-लुढ़काकर उसे रसोई के दरवाज े तक ले गया। जिम्मी ने कॉफी तो बनाने के

1. अमरीका में एक खेल-प्रतियोगिता, जिसमें काउबॉयज घोड़े की पीठ पर बैठकर उसे हाँकते हैं। सबसे ज यादा देर हँकाई करने वाला प्रतियोगिता जीतता है।



लिए रखी थी, पर उसके लिए कप नहीं धोया था। सिमोन को जिम्मी से कोई अलगाव नहीं था। उसे देखकर उसे जेम्स डीन[1] की याद आती थी, शायद उसका चेहरा वैसा था, जैसे वह बाल बनाता था। जिम्मी को इसका भान नहीं था, और शायद यही उसकी सबसे बड़ी ख़ासियत थी।

सिमोन लॉस ऐंजलेस में 12 वर्ष से था, पाँच सालों से वह पारियों में लोगों की हस्तलिपियाँ पढ़ते-पढ़ते जागता था। उससे पाँच पहले उसने फि ल्मों में काम पाने की कोशिश की थी, उसे कोई फ क र नहीं पड़ता था कि काम कैसा हो मुख्य बात यह थी कि वह पुनः किसी फि ल्म के सेट पर होना चाहता था। लेकिन कभी-कभी सेट के निर्माण के काम के अलावा फिर से उसे जानवरों के साथ काम करना पड़ा था, जिनकी वह देखभाल करता था। शहर तक उन्होंने उसका पीछा नहीं छोड़ा था। शूटिंग से पहले वह उन पर सवारी करके उन्हें गरम करता था, उनकी काठी कसता था, खरहरे से उनकी मालिश करता था, उनके खुरों पर मुलम्मा चढ़ाता था और उन्हें चारा खिलाता था। समस्या यह थी कि फि ल्म-निर्माण कुछ महीनों तक ही चलता था। कमाई से अक्सर ज यादा गुज ारा नहीं चलता था।

एक बार जब वह चार महीने किराया नहीं दे सका तो मकानमालकिन बेचैन हो गई थी। ''मुझे मेरे पैसे चाहिए, काउब्वाय,'' हर बार वह फ ोन करती थी, उसे देखती थी तो ऊँचे, स्पष्ट स्वर में कहती थी, ताकि वहाँ जो भी हो सुन ले। मोंटाना के सिमोन मैकडूगाल, पशु-पालक, मि. रोडियो, मि.-फि ल्म करना चाहता हूँ। कंगाल हो गया है। तब सिमोन ने नौकरी खोजने के लिए अख़बार देखना शुरू कर दिया था। और फिर उसने खोज लिया : 'पशु-पालक चाहिए'। पारियों में ड्यूटी करनी होगी। सही लग रहा था, ऐसे लग रहा था कि साथ में कोई और नौकरी भी ढूँढ़ी जा सकती है। इसलिए उसने आवेदन दे दिया। उसे ले लिया गया, क्योंकि वह मोंटाना का एक काउब्वाय था। किसी वजह से लोग समझते थे कि गाँववाले ईमानदार, सीधे-सादे और भरोसेमन्द होते हैं।

रॉबर्ट नाम के एक आदमी ने, जो तीन साल पहले फ ोतों के कैंसर से मर गया था, उसका पथ-प्रदर्शन किया था। अपने सिर पर उसका भी पूरा काम लेने से पहले उसने उसके साथ तीनों पारियाँ की थीं।

''तुझे घुड़सवारी आती है?'' रॉबर्ट का पहला सवाल था, और सिमोन मुस्कराया था, और उसने ''बेशक '' में जवाब दिया था। ''बेशक मैं घुड़सवारी करना जानता हूँ।''

1. गत शताब्दी के 50 के दशक के लोकप्रिय हॉलीवुड अभिनेता, जो युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

सिमोन को निश्चय था कि यह नौकरी उसके लिए एक अस्थायी प्रबन्ध होगा। वैसे ही जैसे न्यूयार्क की मुखौटे बनाने वाली अन्ना, विस्कोंसिन के अभिनेता जिम्मी और नए वाले डेनिस या डेस्मंड वह एक्टर बनना चाहता था, सिमोन उसके बारे में बस यही जानता था उसको भी विश्वास था कि अभी वे बस अगला काम मिलने तक अपनी वर्तमान नौकरी कर रहे थे।

सिफ र्हाक, एक उदीयमान निर्देशक, इस बीच समझ चुका था कि दस साल की चौकीदारी करने के बाद और कुछ सम्भव नहीं था। समझ आ गया कि सपने सुला दिए जाएँ। उसकी पत्नी ने कुछ माह पहले उसे एक पुत्र दिया था और अन्ततः वास्तविक जीवन आरम्भ करने का इससे बेहतर कारण और कोई हो ही नहीं सकता था। बाकी लोग अभी जवान थे और नौकरी भी उनकी इतनी पुरानी नहीं हुई थी। उनमें से कोई भी तीस से ऊपर नहीं था, तब जीवन ऐसे महसूस करवाता था कि सब कुछ है भविष्य में, जिसे अपने हाथों में लिया जा सकता है। सिमोन ठीक से जानता था कि लॉस एंजलेस जैसे शहर में इस विचार को त्यागना कितना कठिन था कि चमक-दमक, ग्लैमर, अपने स्वयं के लिए ही नहीं होते कि जो भी फि ल्मों के लायक पर्याप्त योग्य नहीं था, उसे हथियार डाल देने चाहिएँ। या कम से कम वास्तविकता में आँख खोलनी चाहिए।

सिमोन ने उठकर चूल्हे के ऊपर बनी अल्मारी से एक प्याला निकाला, और उसे आधा कॉफी से भर दिया। कुछ हिचक से उसने अपने बैग को देखा। फिर निश्चयपूर्वक उसे उठाकर उसकी जि प खोली। 'ऐसी की तैसी', उसने मन्द स्वर में कहा और उसमें टटोलने लगा।

सुनहरे ढक्कन ने खुलते हुए चटकने की आवाज की। जब बोतल का मुँह लगभग अनुप्रस्थ प्याले के ऊपर था तो वह ठिठक गया। सोचने लगा उसके विचार काम की इस विशेष जगह पर पीने के पक्ष और विपक्ष में थे। उसने यह पहली बार नहीं किया था और वह खुद को जानता था। वह जानता था कि वह देर-सवेर क्या करेगा। सिमोन ने स्कॉच की बोतल बर्तन रखने की अल्मारी पर वापिस रख दी। सुगन्ध उसकी नाक में दाख़िल हुई, जिसमें ठंडी हो चुकी, कड़क काफ ी की सुगन्ध भी शामिल थी। जल्दी से बोतल बन्द करके उसे पुनः बैग में डाल दिया, प्याला लेकर वह निगरानी वाले कमरे में गया, कुर्सी को टेक से पकड़कर घसीटता हुआ। कुर्सी के छोटे-छोटे पहिये लैमिनेट के फ र्श पर ज ोर से खड़खड़ कर रहे थे। कॉफ ी को कुछ प्रतिशत बढ़िया बनाने से पहले उसने दस मिनट प्रतीक्षा की। उसकी नजर पर्दों पर थी। वहाँ पर H था, तीन O थे, दोनों L थे, W था और D था, उन्हें आगे और पीछे, दोनों तरफ से जानता था, जानता था कि कब उनका अच्छा दिन है और कब बुरा।



वह उनके दृष्टिकोण को भी जानता था, दृष्टि की दिशा सपनों से भरपूर एक शहर से परे जा रही थी।

वे घोड़ी को एक ट्रेलर में लेकर आए थे। हालाँकि उसे डाक से भेजे गए किसी पैकेट की तरह रस्सियों में बाँध रखा गया था, फिर भी वह ज यादातर रस्सियाँ तोड़ने में कामयाब हुई थी। वे ट्रेलर को बाड़े में ले आए थे और वहाँ दाएँ और बाएँ एक-एक आदमी ने खड़े होकर कपाट नीचे किए। सिमोन ट्रेलर के सामने एक छोटे दरवाज े में खड़ा था और शिकारी छुरी से आखिरी गाँठें खोलने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी ज रूरत नहीं पड़ी। ज्योंहि पशु को अपने पीछे दिन की रोशनी का आभास हुआ तो उस तंग जगह में जैसे धमाका-सा हो गया। ट्रेलर की धातु की दीवारों पर खुरों की मार का शोर तोपें चलने जैसा था। साथ ही वह उल्टी चारों पैरों पर पीछे से ट्रेलर से कूद गई और उसने आखिरी फन्दे तोड़ दिए। धूप में सिमोन ने उसे ठीक से देखा। वह देखने में कमज ोर सी लग रही थी, साथ ही ख़त्म होती लग रही थी, और ऐसे कि जैसे अभी शुरू हुई थी। ठोड़ी से कटी लगाम कान पर लटक रही थी। नथुने चौड़े खुले थे, उसके कुच्छ धक्कों में निकली श्वास की तेज ताल पर उठ रहे थे। ट्रेलर में जहाँ रस्सियाँ उसकी खाल को छू रही थीं, वहाँ रगड़ से झाग निकल रही थी, जो लहू में मिलकर गुलाबी हो गयी थी। एक और जगह, रगड़ के जख़्मों के अलावा एक और बड़ी गहरी चोट थी, क्योंकि पीछे वाले बाएँ खुर की सन्धि के पीछे की सफ ेदी लाल हो रही थी और लहू तेज ी से उसके खुर के ऊपर के बालों से उजली रेत पर टपक रहा था। वह इतना ज यादा काला था कि सिमोन और बाकी आदमियों के लिए पहचानना असम्भव था कि लहू और पसीने में फ र्क कहाँ था। आधे सेकिंड के लिए वह एक मूर्ति की तरह अचल खड़ी हो गयी, सिर उठाकर उसने बाड़ के पीछे खड़े चारों आदमियों को घूरा। फिर वह चारों पैरों से ज मीन से ऐसे उठी मानो उड़ना चाहती हो, सिमोन को ऐसा लगा, एक काला स्याह घोड़ा, जिसकी एकमात्र सफ ेद खुर-सन्धि थी, जो अब लाल हो चुकी थी। हवा में उसने अजब-गज ब तरह से ऐंठ कर दिखाया। कई मिनट उसने गोल बाड़े में उत्पात मचाया, हताशा में बाहर निकलने की राह ढूँढ़ते हुए। अन्ततः जब वह समझ गई कि ऊँची बाढ़ से फाँदना असम्भव है तो वह उससे टक्करें मारने लगी।

सिमोन ने उनमें से एक आदमी के कन्धे पर प्रशंसात्मक भाव में थपकी थी। ''कहाँ से लाए इसे?''

''हमने सोचा था कि तुम्हें एक सही चुनौती मिलनी चाहिए'', जो आदमी बाईं तरफ सबसे दूर खड़ा था, उसने जवाब दिया, और साथ ही हरेक को एक-एक सिगरेट

उसने भेंट की।

''इसलिए यह एक रहस्य ही रहेगा कि छोरी हमें कहाँ से मिली है।''

लाइटर को भी सबके सामने घुमाया गया, आदमियों ने धूम्रपान करते हुए घोड़ी की भागने की कोशिशों को देखा था। सिमोन एक रोडियो-अश्व को देखते ही पहचान जाता था।

''तुम्हें इसे कोडी में ले जाकर वहाँ इसे बेचना चाहिए था। यह तो राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाला माल है।'' सिमोन ने कहा।

''एक ट्रेलर का सत्यानाश तो यह कर चुकी है, जार्ज की दो उंगुलियाँ भी तोड़ दी हैं। हम इसे वहाँ 350 मील नीचे कभी नहीं ले जा सकते।'' जॉर्ज ने पुष्टि के लिए अपना हाथ उठाया। उसकी दो उंगलियों पर पलस्तर था। सिमोन की तरफ देख कर वह एक भद्दी हँसी हँसा, और आदमी भी हँसने लगे।

उनके जाने के बाद सिमोन काफ ी देर बाड़े की दीवार के पास खड़ा उसे देखता रहा था। यह उन जंगली घोड़ों में से होगी, जो ऊपर पर्वतों पर रहते हैं। उसके लिए यह एक पहेली थी कि ये लोग उस तक पहुँचे कैसे, यह एक ऐसा पशु था, जिसे खुला नहीं छोड़ा जाता। कहीं उसने पढ़ा था कि ये घोड़े स्पेनी विजेता घोड़ों के सीधे वंशज थे, वे घोड़े, जो अश्वों और बेर्बेरों[1] के वशंज थे, तगड़े, जिद्दी, तेज । पुराना खून। अब उसका लहू पहले से ज यादा बह रहा था। बाहर निकलने की उसकी कोशिशों की वजह से रेत पर उसके लहू की बूँदों की कुंडलियाँ बन गई थीं।

सिमोन की दृष्टि डिजिटल घड़ी पर पड़ी : 02 : 31। फिर वह अपनी बोतल की तरफ मुड़ा, जो कप की बगल में पड़ी थी, उसमें ताज ी ग रम कॉफ ी थी। कॉफ ी बिलकुल वैसी थी, जैसी सिमोन को पसन्द थी। पच्चीस साल से कॉफ ी पीने के अनुभव से वह मदिरायुक्त कॉफ ी बनाने में माहिर हो गया था।

''तेरा पानी भी,'' वह कटुतापूर्वक बुदबुदाया। उसने स्कॉच के ढक्कन को खोला, शराब कल-कल करती बोतल के गले से निकली। प्याले को उसने तकरीबन नाक तक भर दिया; नीचे झुककर उसने कप के छोर से पहला घूँट भरा, हाथ उसने बर्तन रखने की अल्मारी पर टिकाए थे। अब उसने कप को सावधानीपूर्वक उठाया और जब उसने दो घूँट और पिये तो वह ट ्रेसी के बारे में सोच रहा था। ट्रेसी, जो नाख़ूनों पर गुलाबी पॉलिश लगाती थी और कहती थी, ''तुझे इतनी ज यादा नहीं पीनी चाहिए, सिमोन।'' ऐसा नहीं कि वह हर बार यही कहती थी। ज यादातर वह कहती थी, ''जान, मुझे पैसे चाहिए।'' अथवा, ''ऐसे नहीं चलेगा, सिमोन!'' अन्तिम दिनों

1. बेर्बेर : उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका के यूरोपीय वंश के घोड़े।



में वह ज यादातर ख़ामोश रहती थी। बिल्ली को गुस्से से भरकर सिर और पीठ पर ऐसे मारती थी जैसे उसे मार ही डालेगी। 'तुझे छोड़ दूँगी' उसने कभी नहीं कहा था। बस छोड़कर चली गई थी, सिमोन और बिल्ली को। जब वह रसोई में खड़ा छोटे-छोटे घूँट भर रहा था तो बिल्ली के बारे में सोच रहा था। बिल्ली का अब तक कोई नाम नहीं था। वह नहीं जानता था कि उसका क्या करे। उसे वह रखना चाहता था, उससे पीछा छुड़ाने के लिए उसने अब तक कुछ नहीं किया था।

कप को सावधानीपूर्वक पकड़े हुए सिमोन निगरानी करने वाले कमरे में लौट आया।

सिमोन फिर से कुर्सी पर बैठकर बारी-बारी से कप को और पर्दों को देखने लगा। एक पर्दे पर वर्णों की पिछली तरफ की तस्वीर वह सामने ले आया, फिर बाद वाले वर्णों की ओर फिर पहले वालों की, और फिर वह उनकी सामने वाली तस्वीर ले आया। उसने ठोड़ी अपने दाएँ हाथ पर टिका दी और H के पीछे अन्धकार को देखने लगा। वह उसे घूर रहा था और तस्वीर उसकी आँखों के सामने धुँधली हो रही थी, उसने अपनी जम्हाई रोकी। सिमोन ने की-बोर्ड के पास पड़े कप को उठाकर उसे पीकर खाली कर दिया। स्कॉच निगलने के बाद उसने चेहरा बिगाड़ा, ज रा सा लड़खड़ाता हुआ उठा और टायलेट में चला गया।

थोड़ी देर वह पैंट टखनों तक उतारे टायलेट-सीट पर बैठा रहा। साथ वाली दीवार को ताकता रहा। वहाँ नया ड्यूटी-कैलेंडर टँगा था।

अलग-अलग पारियों को रंगों में और सुन्दर हस्तलिपि में लिखा गया था। उसने देखा कि सप्ताहान्त को उसे नौकरी पर नहीं आना था, जो बात उसके दिमाग से निकल गई थी। टायलेट के दरवाज े पर *एल-ए-कांफिडेंशल* का एक फि ल्म-पोस्टर लगा था। किम बासिंगर शून्य में ताक रही थी, केविन स्पेसी किसी को पेशाब करते हुए देख रहा था। फ लश चलाने और पैंट के बटन लगाने से पहले सिमोन काफ ी देर अभिनेत्री के मुँह को निहारता रहा।

वह रसोई से होकर वापस गया। वहाँ अभी पाँचवें हिस्से तक भरी बोतल पड़ी थी। दिन में सिर्फ एक बार वह बाहर आता था, घोड़ी के लिए एक बाल्टी पानी टाँगने और उसके सामने घास डालने। उसने खाना शुरू नहीं किया, चौथे दिन सुबह उसने देखा कि उसने कुछ पानी पीया था। छठे दिन उसने उसे उसके नए नाम से बुलाया था।

''पुराना खून'', उसने कहा था और उसने कान हिलाए थे।

सातवें दिन उसके एक दोस्त ने फ ोन किया। जहाँ वह बैठा था वहाँ से घोड़ी

को देख रहा था। बाड़ पर गर्दन लम्बी करके पर्वतों को निहारने के अलावा वह ज यादातर कुछ और नहीं करती थी।

''और कैसे चल रही है वह?''

उसका वज न कम हो गया था। खाल के नीचे हड्डियाँ नज र आनी शुरू हो गई थीं। टाँगों पर अभी जख़्म थे, उन्हें भरने का समय ही नहीं मिला था। भाग निकलने की अपनी कोशिशों में वह अपने जख़्मों को फिर खोल देती थी।

''उसे क्या पहाड़ों से पकड़कर लाए थे?''

जवाब देने से पहले उसका दोस्त एक सेकिंड चुप रहा।

''जॉर्ज ने बता दिया क्या तुम्हें?''

''कुछ बुरा नहीं हुआ,'' सिमोन ने जवाब दिया, ''लेकिन वह किसी काम की नहीं है।''

''तुम भी तो फट्टू हो,'' दोस्त हँसा, ''उसे आज मा कर भी नहीं देखा होगा।''

सिमोन ने सर उठाया और उसकी नज र पहाड़ों की तरफ उठ गई।

''हम अभी आ रहे हैं, और मिलकर उसे आज माते हैं।''

फ ोन रखने के बाद सिमोन कुछ देर वहीं बैठा रहा। रिसीवर को घूरते हुए उसका ध्यान सबसे पहले अपने पिता की ओर गया, और फिर उसके ख़्याल कैलिफोर्निया की दिशा में मुड़ गए। वह समुद्र-तटों के बारे में सोच रहा था, खूबसूरत लड़कियों और सुनहली धूप के बारे में। फिर वह उठकर बाहर चला गया, अपने दोस्तों का इन्तजार करने लगा।

उसने उसे उसके नए नाम से बुलाया, लेकिन इस बार कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई।

''मैं यह किस्सा सुनाऊँगा और मैं निर्णय लूँगा कि वह आगे कैसे बढ़ता है।''

सिमोन ने हाथ पतलून की जेबों में डाल रखे थे और वह खुद को मूर्ख सा महसूस कर रहा था। उसने एक पत्थर को ठोकर मारी। जब जॉर्ज की पुरानी पिक-अप वैगन की मोटर का सुस्पष्ट शोर नज दीक आने लगा तो घोड़ी ने दोनों कान पीछे घुमा लिये।

'आ जा, आ जा,' घोड़ी बोली थी, 'आ जा और कोशिश करके देख ले।'

सिमोन की याद में था आसमान। बादल लटक रहे थे उससे, किसी तरह से अन्धकार युक्त था, जिसमें कुछ उजले छल्ले थे बाद में उसने उसकी व्याख्या किसी भविष्यवाणी के रूप में की थी। एक ख़ास डिज इन के छल्ले ने उसका दिमाग हिला दिया था, शायद इसलिए कि वह अन्तिम था, जो उसने देखा था।

उसे याद नहीं आ रहा था कि किस तरह घोड़ी ने रेत का बोरा अपनी पीठ पर



लादे हुए लगाम तथा फन्दे से खुद को बचाने की कोशिशें की थीं। यह भी नहीं कि जब सफ ेद खुर-सन्धि वाली टाँग को उसके पेट के नीचे बाँधा जा रहा था, ताकि उसकी मुद्रा कुछ आसान हो जाए, तो वह कैसे दिखाई दे रही थी। उसे वे प्रहार भी याद नहीं थे, जो उसने सहे थे, जिनमें से अधिकांश उसके अपने हाथ के प्रहार थे। सिमोन के दिमाग में उसकी आँखों की कोई तस्वीर नहीं थी।

सिमोन ने आँखें खोलीं। घड़ी में सुबह के छः बजकर दो मिनट थे। उसका सर आगे को ढलक गया था और बाँहों से उसने सीने पर कैंची बना रखी थी। निगरानी के कमरों में कमरा छोड़कर जाने से ज यादा ड्यूटी के घंटों में सोने की पाबन्दी थी। उसने दो-तीन बार आँखें आँखें झपकाईं, बाँहें लम्बी आगे फैलाईं और वह उठ खड़ा हुआ। उसे ज रा सा चक्कर आया, उसकी कपनट्रिटयों में एक अप्रिय पीड़ा होने लगी, दिल की धड़कन की ताल पर सिर बजने लगा। सिमोन रसोई से एक गिलास पानी ले आया। फिर कुर्सी पर बैठकर उसने शीशी से दो एस्प्रीन अपनी बाईं हथेली पर निकालीं और उन्हें पानी के साथ निगल गया। गिलास को की-बोर्ड पर रखने के बाद जब उसकी नज र पर्दे पर पड़ी तो उसने उसे देखा।

वह दूसरे L पर खड़ी थी। औरत के काले बाल थे, जो उसके कन्धों पर गिरे थे। उसका चेहरा भावशून्य था। सिमोन अक्सर सोचा करता था कि वह तब क्या करेगा, कैसे बरताव करेगा, जब कभी कोई वर्णों पर नज र आएगा लेकिन उसे उस भय का अनुमान नहीं था, जो उसके तन-मन में इस औरत को देखकर समा गया था। उसका चेहरा बहुत सफ ेद था, उसके नीचे वाले L जितना सफ ेद। बाएँ हाथ से उसने रिसीवर उठाने का उपक्रम किया, उसने उससे दृष्टि नहीं हटाई। सिमोन कभी स्पष्ट नहीं कर पाएगा कि क्यों उसने तुरन्त रिसीवर उठाकर पुलिस तक पहुँचाने वाला सीधा बटन नहीं दबाया था, इसके अलावा कि वैसे भी उसने देर कर दी थी। वह उसी मुद्रा में बैठा ही रहा रिसीवर पर हाथ, पर्दे पर आँखें, बाद में वह यह भी नहीं जानता था कि वह इन सैकिंडों में क्या सोच रहा था, जब उसे सही निर्णय लेना था। वह भावहीन थी, उसने बाँहें बाहर नहीं फैलाईं, आकाश पर दृष्टि नहीं डाली, बल्कि सीधे नगर के रोशन कालीन पर नज र गड़ाए रही। और जैसे ही वह हिली, तभी ग ायब हो गई। इन पन्द्रह मीटरों पर वह किसी पत्थर की तरह हवा में गिरी थी और झाड़ियों में गायब हो गई थी। सिफ ़ एक चीज जो उसे याद रही, वह थी L पर उसके बालों की निहायत खूबसूरत परछाईं, और कि उसने जूते नहीं पहने थे।

सिमोन पर्दों वाली दीवार के सामने प्रतीक्षारत था। उसने कैमरे की दृष्टि नहीं मोड़ी। शायद वह दुबारा L के ऊपर प्रकट होगी, शायद वह सर्कस की कलाकार थी, उसने

सोचा, या जादूगरनी थी दोनों ख़्यालों पर उसे हँसी आई, लेकिन उसी पल वह उस ऊँची, उन्माद भरी आवाज से हचक गया, जो उसके मुँह से निकली थी। तब जाकर उसकी तर्जनी सही बटन पर लगी और उसने रिसीवीर कान से लगा लिया।

''हाँ,'' वह बोला, ''एंटविस्सल, हाँ।''

रिसीवर को कान और कन्धे के बीच दबाकर सिमोन ने डिजिटल घड़ी पर दृष्टि डाली, ''हाँ हाँ आई।'' उसने उसाँस भरी, फिर वह मन्द स्वर में बोला।

''अन्दाजन छः बजकर आठ मिनट पर।'' दूसरे ने फिर कुछ कहा, ''नहीं'' उसने टोका, ''नहीं, वह दूसरे L से कूदी है, पहले से नहीं।'' उसका पूरा शरीर काँपने लगा।

''आपके ख़्याल से हॉलीवुड में कितने L होते हैं?'' एक बार फिर टोकने के बाद वह चिल्लाया।

काँपना बढ़ता जा रहा था। उसके दाँत उसके नियन्त्रण में नहीं थे और बज रहे थे। उनचालीस सालों में उसे कभी इतनी ठंड महसूस नहीं हुई थी।

''मैं तसदीक करता हूँ,'' वह बोलकर हैरान हुआ कि वह शब्द मुँह से निकाल पाया था। ''6.08 स्थानीय समय पर हॉलीवुड के दूसरे L से एक अपरिचित जनानी कूदी है। इसकी जाँच की जाए।''

ठक्क से उसने फोन रख दिया। आख़िरी लफ ज बोलने से पहले एकाएक ठंड का एहसास वर्णनातीत गरमी में बदल गया। उससे बुरा यह था कि उसे अब स्कॉच की गहरी तलब लग रही थी।

वह सीधा हुआ, नल बन्द करके उसने टॉयलेट के छोटे आईने में खुद को निहारा। हाथ ऊपर होकर अजनबी के गालों पर जा लगे, जैसे उसे लग रहा था, उसने जि न्दगी में पहली बार देखा है। पानी की बूँदें सिमोन के उस ठंडे पसीने की परत से मिल रही थीं, जो कै करने पर उसका छूटा था। उसे लग रहा था कि उसमें से बदबू आ रही है; काफी नीचे गले में उसे पित्त महसूस हो रही थी। उसने अपने चेहरे की त्वचा को कस कर देखा। नतीजन उसका मुख विकृत हो गया। सिमोन ने त्वचा फिर शिथिल कर दी। फ ोन की घंटी सुनने के लिए उसने टायलेट का दरवाज ा खुला छोड़ दिया था। वह नहीं चाहता था कि वे उसे फ ोन करें। वह कोई विवरण लिखकर नहीं देना चाहता था। वह उसका नाम नहीं जानना चाहता था, यह भी नहीं जानना चाहता था कि उसने यह क्यों किया? उसके कूदने के सिर्फ बीस मिनट बाद जब सूर्योदय हुआ तो वह किसी को नहीं बताना चाहता था कि उसने खोज निकाला है। वहाँ, L पर भोर के झुटपुटे में कुछ प्रकट हुआ था। एक साथ करीने से रखे, बाएँ सिरे के पास, सन के कपड़े के दो छोटे-सफे द जूतों का जोड़ा।



सिमोन फिर घूमने वाली कुर्सी पर बैठा था। उसक हाथ में एक कापी थी, उसमें उसने दो वाक्य लिखे थे। यूँ लग रहा था जैसे समय एक असीम, खींचकर लम्बा करने योग्य रबड़ में बदल चुका है, जैसे वह अनन्त समय से निश्चल अपनी घूमने वाली कुर्सी पर बैठा है, और जबकि समय अभी सात बजने में कुछ मिनट का था। अन्ना आने वाली होगी। इस बीच बाहर उजाला हो चुका था, उसे एक सिगरेट और एक जाम की तलब लग रही थी, लेकिन वह फ ोन से दूर जाने की हिम्मत नहीं कर सकता था। हर बार जब उसकी नज र पर्दे पर पड़ती थी तो उसे L के ऊपर औरत के जूते पड़े नज र आते थे। ये रेखाचित्र से थे एक तरह के, उन्हें देखने के लिए एकाग्रता चाहिए थी, लेकिन वे वहाँ थे। वर्णों के नीचे लोग झाड़ियों से आ जा रहे थे। अधिकांशतः पुलिसवाले, उनमें से बहुतों ने काले चश्मे लगाए हुए थे। औरत की लाश अभी निकाली नहीं गई थी, लेकिन अदालत का चिकित्सक उस तक पहुँचने वाला था, उसके पीछे दो आदमी थे, जिन्होंने परिवहन करके ले जाने वाले ताबूत उठाए हुए थे। सिमोन सोच रहा था कि अन्ना से क्या कहेगा। फ ोन ख़ामोश था।

अगले बीस मिनट मे कॉपी पर दो वाक्य लिखे गए, *'उसे याद है कि ठंडी टाइलों में लहू की गन्ध थी।'* दो सितारों के साथ लिखा था, *डबलरोटी और दूध*। बिल्ली का खाना उसे याद नहीं आया था। स्कॉच और बीयर लिखने की उसे ज रूरत नहीं थी। यह अधिक सम्भव था कि जब वह दुकान में घुसेगा तो दूसरी दो चीजें भूल जाएगा।

औरत की लाश अब भी ढँकी हुई, वर्णों के नीचे पड़ी थी।

जब उसने अन्ना की गाड़ी के पार्किंग-स्थल पर पहुँचने की ध्वनि सुनी तो कापी उसने बन्द करके बैग में ठूँस ली। वह उसके पास जाने ही वाला था कि फ ोन की घंटी बजी। सिमोन ने फ ोन की तरफ सिर घुमाया। अन्ना ने दरवाजे से प्रवेश किया। उसका मुँह अब भी नींद से सूजा हुआ था, अभिवादन करते ही वह सिमोन की बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई। सिमोन ने मुँह खोला, पर फिर बन्द कर लिया। उसने पर्दों की दिशा में देखकर सिर हिलाया। एक पल अन्ना के चेहरे पर न समझने का भाव था। फिर उसे धीरे-धीरे समझ आना शुरू हुआ। पुलिस, चिकित्सक, ताबूत एक आदमी तीन और को बुलाता सा लग रहा था।

''जानती हैं आप कि यह कौन है?'' अन्ततः सिमोन ने पूछा। फ ोन के दूसरे सिरे से स्वर तेज था। वह बता रहा था कि उसे सिमोन को सूचना देनी पड़ रही है कि उन्हें उसकी अब ज रूरत नहीं है। सिमोन की दृष्टि पर्दे पर गई, जहाँ जूते नज र आ रहे थे। उसने मुँह फिर एक बार खोला, वह जूतों के बारे में कुछ कहना चाहता था, उसने सोचा कि उन्हें बताए कि वह अपने जूते L पर छोड़ गई थी, और

कि किसी को ऊपर चढ़कर उन्हें लाना है, क्योंकि अगर यह नहीं हुआ तो जूते शाश्वतकाल तक वहीं पड़े रहेंगे या कम से कम अगले तूफ ान तक तो वही रहेंगे। लेकिन जूतों की बात उसने नहीं की, बल्कि पूछा कि क्या वह अपना बयान थाने पर दे सकता है। उसके प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया गया।

''जैसे कहा गया है, यह मामला बिलकुल साफ है,'' दूसरी तरफ से स्वर ने कहा।

साफ मामला। इससे बेहतर ढंग से इसे नहीं कहा जा सकता, सिमोन ने सोचा।

फ ोन रखकर उसने अपना चेहरा दोनों हाथों में रख लिया।

''क्या हुआ है?'' अन्ना ने पूछा और अपना हाथ उसके कन्धे पर रखा। वे दोनों आदमियों को औरत की लाश वाहन में जाने वाले ताबूत में रखते देख रहे थे। सिमोन और अन्ना को सिर्फ उसके काले बाल नज र आ रहे थे, जो उसके उठाए जाने के कारण आगे-पीछे हिल रहे थे, जैसे उस सिर में अब भी जान हो, जिसने उन्हें उठाया हुआ था।

''सिमोन, क्या हुआ है?'' अन्ना ने दुबारा पूछा। उसका स्वर भरभरा और कम्पज ोर था।

''एंटविस्टल'', उसने अन्ततः उत्तर दिया, ''आज छः बजे वह कूदकर मरी है।''

''किसी के देखे बिना वह ऊपर कैसे पहुँच गई?''

सिमोन ताज्जुब में था कि अन्ना के स्वर में उलाहना नहीं था, बल्कि विस्मय था। इस प्रश्न का उत्तर यह निर्णय करेगा कि क्या वह अपनी नौकरी गँवा देगा?

''मैं बाहर था,'' वह बोला। ''मैं टायलेट में था।''

मैं नशे में था और सो गया था, उसने सोचा।

''पहले बाहर और फिर टायलेट में?'', अन्ना ने दोहराया, और इसमें कहीं शक की झलक नहीं थी। उसके कानों को यह एकदम विश्वास योग्य प्रतीत हो रहा था। अक्सर वे इस पर बात करते रहते थे कि एक पारी को बिना अन्तराल दिए अन्त तक पूरा करना असम्भव था।

''वह अचानक वहाँ खड़ी थी। मैंने सिर्फ उसे कूदते देखा है।''

अन्ना चुप रही। आख़िर में खड़ी होकर वह रसोई में गई और एक गिलास पानी का ले आई, जो उसने सिमोन के सामने रख दिया। सिमोन ने गिलास नज रअन्दाज कर दिया।

''बहुत भयानक है यह तो,'' अन्ना आख़िर धीमे स्वर में बोली।

''मैं घर जा रहा हूँ।'' सिमोन खड़ा हो गया। वह व्यवहार से व्यग्र तथा अनाड़ी लग रहा था।

''हाँ, हाँ,'' वह बोली, ''बिलकुल।''



दोनों एक दूसरे से आराम से विदा हुए और दोनों को आश्चर्य हुआ जब अन्ना ने उसे ज रा सा बाँहों में भर लिया।

''तुम्हें अगर किसी से बात करनी हो...'' वह बोलने लगी, लेकिन सिमोन ने ज ोर से न में सिर हिलाया।

''मुझे बस थोड़ी शान्ति चाहिए,'' उसने कहा, ''और कुछ नहीं।'' स्कॉच की खाली बोतल वाला बैग उसने लिया और अपनी गाड़ी में चला गया। जब उसने कार का दरवाज ा बन्द किया तो खुद से कहा कि पारी करते हुए वह अब पिया नहीं करेगा।

वह आगे भी पिया करेगा, कुछ हफ तों की बात थी जब वह फिर से दो बोतलें लेकर काम पर आया करेगा लेकिन अगर उसके पास हुईं तो।

सिमोन ख़रीददारी करने गया। दुकान में उसे सब अवास्तविक और कुछ ज यादा ही रंग-बिरंगा नज र आ रहा था। उसने डबलरोटी और दूध, बिल्ली का खाना उठाया संयोगवश वह रैकों की ग लत क तारों में मुड़ गया और बीयर तथा स्कॉच की तीन बोतलें भी उठाईं।

जब वह ख़रीदा हुआ सामान गाड़ी में सामान की जगह पर रख बैठा तो ड्राइवर की सीट पर बैठकर उसने बोतल में आराम से छोटे-छोटे घूँट लेकर स्कॉच पी। बहुत समय बाद आज पहली बार उसने अपने पीने के कारणों पर चिन्तन नहीं किया। वह वहाँ बस बैठा था, पेपर-बैग में बोतल को कभी मुँह पर लगाता था, कभी घुटनों के बीच रख लेता था, वह सिगरेट पीते हुए सुपर मार्केट से निकलते लोगों की भीड़ को देख रहा था। इस बीच जब उसने बोतल का ढक्कन बन्द किया तो उसे ट्रेसी की याद आई। उसे तसल्ली थी कि जब वह घर पहुँचेगा तो वह वहाँ नहीं होगी। बिल्ली ही बहुत है, सिमोन ने सोचा, बिल्ली और उसकी निरन्तर म्याऊँ-म्याऊँ। उसने चाबी छेद में डाली, उसकी कमीज की आस्तीन ऊपर फिसल गई थी, वह गाड़ी स्टार्ट करने के लिए चाबी घुमाने ही वाला था कि उसकी नज र अपनी दाईं कलाई के घाव के निशान पर पड़ी। वह इतना महीन और सफ ेद था कि उसे उसने कभी ध्यान से देखा ही नहीं था। लेकिन इस बार उसने चाबी छोड़ दी और आस्तीनों को और भी ऊपर कर लिया। अपने चेहरे के सामने हाथ करके उसने बाएँ हाथ की तर्जनी घाव के निशान पर फेरी। उन्नीस टाँके फीके पड़ चुके थे और अब गिनने भी मुश्किल थे। उसने विंडस्क्रीन में से ऊपर की ओर देखा, धूप से उसकी आँखें चुँधियाईं।

मोंटाना और कैलिफ ोर्निया के आसमानों के बीच बहुत दुनिया थी।

जब सिमोन की हालत कुछ बेहतर थी तो उसके दोस्त उसे घोड़ी की आँखों के बारे में बता रहे थे। ''शैतान जैसी,'' जॉर्ज के शब्द थे, चारों आदमियों ने बहुत-सी बोतलें बीयर पी लेने के बाद उस पर बोलना शुरू किया था। शायद इसलिए कि उनके युवा जीवन में उन्हें पहली बार एक ऐसा प्रतिपक्षी मिला था, जिसने सही से उनमें भय का संचार कर दिया था। ऐसी किसी चीज पर कोई नहीं बोलता, जब तक कि आदमी टुन्न न हो, या किसी ऐसी औरत का किस्सा हो, जिसके बारे में चारों की एक जैसी सोच थी।

''शैतान जैसी,'' दोबारा कहकर जॉर्ज ने एक बड़ा घूँट पिया, ''ऐसा कुछ मैंने पहले कभी नहीं देखा। आँखें सिफ ़ सफ ़ेद थीं। उसकी साँस में खून था, सिमोन। हम सब उसके खून की छोटी-छोटी बूँदों से भरे पड़े थे।''

उसने यह जि क्र नहीं किया कि घोड़ी का खून किसी एक क्षण में सिमोन के खून में मिल गया था, वैसे सिमोन का ख़ून सिफ ़ उनके हाथों पर लगा था घोड़ी का तो सब जगह था। बहुत बाद में उन्होंने इस पर बात की थी, वे अपने कपड़ों और चेहरों पर बहुत ही छोटी लाल बूँदों पर हैरान थे, और वे तब तक इस पर बात करते रहे थे जब तक उन पर स्पष्ट नहीं हो गया कि वे कहाँ से थे?

सिमोन अस्पताल में तीन दिन बाद होश में आया, उसकी खोपड़ी अनगिनत मीटर कचरे में लिपटी थी, दाईं बाँह कन्धे तक पलस्तर में थी। उसकी माँ बिस्तर के पास बैठी थी और उसने उसका बायाँ हाथ अपने हाथ में ले रखा था, मौसमों और मेहनत से बूढ़े हुए उसके चेहरे पर चिन्ता के निशान थे।

''सिमोन,'' स्वयं को बहुत हलका महसूस करते हुए वह बोली, ''जाग गया तू!''

''बड़ी किस्मत वाला है,'' डॉक्टर ने कहा, ''सिर की हड्डियों में एक दरार थी, खून का थक्का वहीं से बहकर निकल गया। हाथ ठीक होने में वक त लगेगा, लेकिन ठीक ज रूर हो जाएगा।''

''आप देखेंगे कि आप कुछ महीनों में फिर काठी पर सवार होंगे,'' सिमोन को बर्ख़ास्त करते हुए डॉक्टर ने कहा था।

कुछ दिन बाद जब जॉर्ज उसे अस्पताल में मिलने आया तो सिमोन ने उससे घोड़ी के बारे में पूछा।

''बाकियों को सचमुच बहुत दुख हुआ है,'' जॉर्ज ने अपने हाथ में हैट को अनवरत घुमाते हुए कहा, ''लेकिन वह जा चुकी है,'' 'जा' में दो सम्भावनाएँ आती हैं। या तो उसे वहीं के वहीं गोली मार दी गई थी, या किसी ने उसे भगा दिया था।



''फाटक ठीक से बन्द नहीं था,'' जॉर्ज ने कन्धे उचकाए, और सिमोन को हैरानी हुई कि उसमें असहजता का कितना पुट था। सिमोन की नज र उसकी पलस्तर हुई दो उंगलियों पर जा पड़ी। पलस्तर ताज ा-ताज ा लगाया गया था और नीला सा चमक रहा था।

''फाटक, जानता है, सही से बन्द नहीं था वह,'' जॉर्ज ने दोहराया।

''और बन्दा लहूलुहान ज मीन पर पड़ा था अरे, देखने में सचमुच अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन फाटक सही से बन्द नहीं था, मुझे उसे बन्द करना चाहिए था, मगर मैं जानता हूँ कि तुम तक पहुँचना ज् यादा ज रूरी था, इस शैतान के बिना, जिसने तुझे कुचल कर रख दिया था। तो थोड़े में कहूँ तो उसे भगाने में कोई ख़ास मेहनत नहीं करनी पड़ी। इससे पहले कि हमें पता चलता कि हुआ क्या है वह जा चुकी थी।''

सिमोन ने अपने दोस्त की पलस्तर वाली उंगलियों से नज र हटा कर ऊपर छत की ओर कर ली।

''तब कुछ किया नहीं जा सकता था,'' जॉर्ज ने सिमोन की खामोशी के बाद धीरे से जोड़ा।

''वहाँ खड़े हम अनर्थ होते देख रहे हैं, और उसके बावजूद सब कुछ बहुत धीरे-धीरे।'' जॉर्ज ने हताशापूर्वक सिर हिलाया, सिर पर हैट रखकर उसे ऊपर उठाया। जब वह निकलते हुए दरवाज ़े पर था तो सिमोन ने कुछ कहा

''उसने हमारी बात का सचमुच बुरा नहीं माना था, जॉर्ज।''

जॉर्ज मुड़ कर कुछ देर नीचे फ र्श पर देखता रहा।

''मुझे यक ीन नहीं है कि जानवर किसी चीज का बुरा भी मान सकते हैं, सिमोन। ऐसा होता तो सब घोड़े, जिन्हें तूने तोड़ डाला था, तेरी जान के दुश्मन होते। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत वे हर दिन तेरे हाथों से घास खाते हैं। हमने बस ध्यान नहीं रखा। यही एक हमारी ग लती थी।''

फिर जॉर्ज ने अपने स्वस्थ हाथ से दरवाज ा खटखटाया, अन्तिम बार मुस्कराया और चला गया।

बाँह ठीक हो चुकने के बाद सिमोन ने कुछ और घोड़े भी सधाए। उसे डर नहीं लगा था! जो कुछ वह करता था अच्छा करता था और एक पुराना ख़ून किसी भी मनुष्य के जीवन में सिर्फ एक बार उसके सामने पड़ता है। शाम को वह टीवी के सामने बैठकर पुरानी फि ल्में देखता था। उसने किसी को नहीं बताया कि वह क्या करने वाला है। भाग जाएगा, घोड़ी की तरह। उसे बस एक खुला फ ाटक चाहिए था और अरबी घोड़ी से मुलाक ात के उन्नीस महीने बाद फाटक खुला था।

एक बार जब उसके माता-पिता सप्ताहान्त में एक यात्रा पर गए थे उसने मौक ा का फ ायदा उठाया था, अपनी गाड़ी को ऊपर तक भरकर कैलिफ ोर्निया निकल गया था, अनन्त ग्रीष्म में, एक बार भी पीछे मुड़कर देखने का जोखिम उसने नहीं उठाया।

लेकिन घोड़ी की तरह वह घर लौटकर नहीं आया।

उसके बाद सत्रह साल गुज र चुके थे। सिमोन सुपर मार्केट के निकास-द्वार को देख रहा था। एक बड़ा चश्मा पहने एक औरत ख़रीददारी की पूरी रेहड़ी भरे बाहर निकली। उसने अन्तिम बार घाव के निशान पर उँगली फेरी, फिर उसने आस्तीनें नीचे कर लीं। जिस औरत ने कूदकर आत्महत्या की थी उसके बालों का रंग घोड़ी की खाल जैसा था। काला स्याह। उसके जूते सफ ेद थे। उसने चाबी से गाड़ी स्टार्ट की और निकल गया।

महिला वेटर उसके लिए कॉफी और आमलेट लेकर आई। सिमोन को भूख लगी थी, लेकिन जब उसने भोजन उसके सामने रखा तो भूख उड़ गई। कोहरा पीले धुएँ के कारण छँट गया था या शायद कोहरा कभी था ही नहीं, बल्कि हमेशा कोहरे और धुएँ का मिश्रण था। एकदम सही कौन बता सकता है? सिमोन तो निश्चित रूप से नहीं कह सकता। उसने एक घूँट कॉफ ी का पिया। जब उसने दृष्टि उठाई तो सामने वर्ण थे।

'हॉलीवुड' लिखा था वहाँ, फरिश्तों के शहर के घरों के ऊपर।

**मूल शीर्षक : Hollywood**





# रात मिलती है रात से

**मारिया बातोरोवा** — **अनुवाद : स्वाति यादव**

खो गया वक त
और खो गए दिन
सिफ र्फ रात मिलती है रात से

तो बैठ जा रे बाज
बीच के वक त में तब तक
जब तक खुल न जाएँ हम
थिरकने न लगें उस ताल पर
जो जानती है नृत्य सिफ र्फ मृत्यु का
जानती है राह केवल सन्नाटे की

कुछ ख़ूबसूरत नहीं रहा मेरे पास
जो बगल में पड़ा श्वास ले रहा हो
देखता हो हैरत भरी मखमली नज र से
फूलों से सजी कोई दुल्हन

जमा रहा है पाला
काट रहा है हड्डियों को
जुग जुग जग जियो
प्रिय
बुरा न सोचना कभी।

# यादें

**यारोस्लाव साईफ र्ट** **अनुवाद : डागमार मारकोवा**

बाँध लेती हैं यादें कभी-कभी
नहीं कोई कैंची जो काट दे
इन से बुने धागों
या रस्सियों को!

देख रहे हो वह पुल
कलाकार के घर से निकट?
पुल से कुछ सीढ़ियाँ पहले
मार दिया फौजि यों ने उस मज़दूर को
चल रहा था जो मेरे आगे आगे!

सिर्फ बीस का था तब मैं
पर जब भी निकलता हूँ उधर से
याद लौट आती है
पकड़ लेती है मेरा हाथ
चलते हैं हम दोनों एक साथ
यहूदी क ब्रिस्तान के उस छोटे फाटक की ओर,
भाग रहा था जिसमें से हो कर
बचने के लिए
उनकी बन्दूकों से।

गुज रते गये साल अपनी
सन्दिग्ध लरजती चल में
उड़ते रह साल
समय रुक नहीं गया जब तक।

❑❑❑